कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि साप्ताहिक

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2022-24 RNI No. 1832/57

डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 13 जून 2022 वर्ष-76 अंक- 41 मूल्य-रु. 12/- कुल पृष्ठ-16 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िए

5

रागी की खेती कैसे करें

6

हल्दी की ये किस्में देती ज्यादा मुनाफा

वर्ष 2022-23 के लिए खरीफ फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित

सोयाबीन का 4300, धान का 2040 रु. प्रति क्विं. एमएसपी तय

एमएसपी में 92 से 523 रु. प्रति क्विं. तक की वृद्धि

(नई दिल्ली कार्यालय)

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने खरीफ विपणन वर्ष 2022-23 के लिए फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) घोषित कर दिया है। इस वर्ष एमएसपी में 92 से 523 रुपये प्रति क्विं. तक की वृद्धि की गई है। केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री अनुराग ठाकुर ने यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि धान के समर्थन मूल्य में पिछले साल के रू. 1940 प्रति क्विंटल में 100 रुपये बढ़ाकर वर्ष 2022-23 के लिए रू. 2040 एवं सोयाबीन के गत वर्ष के मूल्य 3950 में 350 रु. की वृद्धि कर इस वर्ष के लिए 4300 रु. प्रति क्विं. एमएसपी किया गया है। श्री ठाकुर ने बताया कि प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) द्वारा एमएसपी में वृद्धि को स्वीकृति दिया जाना किसानों के हित में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है इससे ना सिर्फ उनकी आय में बल्कि जीवन स्तर में भी सुधार होगा। श्री ठाकुर ने कहा कि इस वर्ष तिल के भाव में सबसे अधिक 523 रु. प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है, जबकि तुअर में और उड़द के भाव में रू. 300 प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है। वहीं मूंग में 480 रु. की बढ़ोत्तरी हुई है। उन्होंने बताया कि एमएसपी वह दर होती है जिस दर से सरकार किसानों से खाद्यान्न खरीदती है। किसानों को उनकी उत्पादन लागत पर सबसे ज्यादा अनुमानित रिटर्न बाजरा (85 प्रतिशत) पर, उसके बाद अरहर (60 प्रतिशत), उड़द (59 प्रतिशत), सूरजमुखी (56 प्रतिशत), सोयाबीन (53 प्रतिशत) और मूंगफली पर (51 प्रतिशत) होने की संभावना है।

खरीफ 2022-23 के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (इकाई : रु. प्रति क्विं. में)

फसल	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	वृद्धि	2022-23
धान, सामान्य	1750	1815	1868	1940	100	2040
ग्रेड ए	1770	1835	1888	1960	100	2060
ज्वार हाइब्रिड	2430	2550	2620	2738	232	2970
मालदंडी	2450	2570	2640	2758	232	2990
बाजरा	1950	2000	2150	2250	100	2350
रागी	2897	3150	3295	3377	201	3578
मक्का	1700	1760	1850	1870	92	1962
अरहर	5675	5800	6000	6300	300	6600
मूंग	6975	7050	7196	7275	480	7755
उड़द	5600	5700	6000	6300	300	6600
मूंगफली	4890	5090	5275	5550	300	5850
सूरजमुखी	5388	5650	5885	6015	385	6400
सोयाबीन	3399	3710	3880	3950	350	4300
तिल	6249	6485	6855	7307	523	7830
रामतिल	5877	5940	6695	6930	357	7287
कपास मीडियम	5150	5255	5515	5726	354	6080
लांग स्टेपल	5450	5550	5825	6025	355	6380

भारत से गेहूं निर्यात में मध्यप्रदेश बना सिरमौर

***भोपाल।** मंडी बोर्ड के प्रबंध संचालक श्री विकास नरवाल की मेहनत रंग लाई लगभग 60 लाख क्विंटल गेहूं विभिन्न देशों में निर्यात कर मध्य प्रदेश का मान बढ़ाया। व्हीट एम.पी. को एक ब्रांड के रूप में स्थापित करने में महती भूमिका निभाई मध्यप्रदेश शासन द्वारा गेहूं निर्यात की नोडल एजेंसी मंडी बोर्ड को बनाने के बाद युवा और ऊर्जावान आई.ए.एस. ऑफिसर विकास नरवाल द्वारा अपनी कुशल रणनीति के साथ अपने अधिकारी कर्मचारियों के सहयोग से गेहूं निर्यात में मध्य प्रदेश का स्थान पूरे राष्ट्र में पहले नंबर पर स्थापित किया है। निर्यात नीति लागू होने के उपरांत भारत से कुल निर्यात लगभग 1.50 करोड़ क्विंटल गेहूं निर्यात हुआ, जिसमें सर्वाधिक लगभग 60 लाख क्विंटल गेहूं निर्यात किया, जो कि कुल निर्यात का 40.66 प्रतिशत है। लगभग 41 लाख क्विंटल गेहूं निर्यात कर गुजरात दूसरे स्थान पर है। गुजरात से निर्यात किये गए गेहूं की मात्रा में एक बड़ा भाग मध्य प्रदेश में उत्पादित गेहूं का है। तीसरे स्थान पर पश्चिम बंगाल इसके बाद उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब आदि राज्य हैं।*

श्री विकास नरवाल
एमडी, मंडी बोर्ड

मुख्यमंत्री के आदेशानुसार मध्य प्रदेश निर्यात प्रकोष्ठ के प्रभारी अधिकारी श्री नरवाल द्वारा लगातार अपनी कड़ी मेहनत से गेहूं निर्यात को एक मिशन के रूप में लेकर कार्य किया। सामंजस्य स्थापित कर विभिन्न एजेंसियों के वरिष्ठ अधिकारियों से सतत बैठक कर उनसे जीवंत संपर्क स्थापित कर निर्यात की कार्रवाई को अग्रणी बनाया है, जिसमें रेलवे के साथ विशिष्ट रूप से योजना तथा रणनीति बनाकर गेहूं निर्यात को अंजाम दिया है। मध्य प्रदेश में तत्काल निर्यात के लिए प्रोत्साहन नीति को लागू किया, मध्य प्रदेश के लगभग 2000 व्यापारियों को निर्यातक के रूप में पंजीबद्ध किया गया, ई-अनुज्ञा पोर्टल को निर्यात की विभिन्न गतिविधियों के संचालन के लिए सुदृढ़ किया तथा मंडी बोर्ड में निर्यात सेल को स्थापित कर समस्त अधिकारी/कर्मचारियों को निर्यात की कार्रवाई में संलग्न किया गया, जिसमें मुख्य रुप से अपर कलेक्टर/अपर संचालक श्री डी.के. नागेंद्र, अपर संचालक श्री चंद्रशेखर वशिष्ठ, सहायक संचालक श्री पीयूष शर्मा, स.उ.नि. श्री दीपक गोयल की महती भूमिका रही है।

मंडी बोर्ड के सात संभागों में भोपाल संभाग द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सर्वाधिक लगभग 41 लाख क्विंटल गेहूं का निर्यात संभाग की मंडियों से किया गया, उक्त उत्कृष्ट प्रदर्शन में भोपाल संभाग की संयुक्त संचालक श्रीमती रितु चौहान का मार्गदर्शन सराहनीय रहा।

देश के 16वें राष्ट्रपति का चुनाव 18 जुलाई को

21 जुलाई को होगी मतगणना

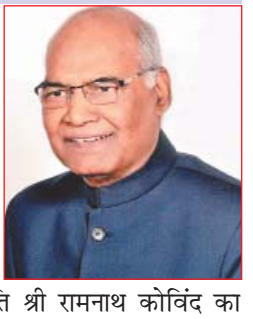

नई दिल्ली। देश के 16वें राष्ट्रपति के चुनाव के लिए आयोग ने कार्यक्रम घोषित कर दिया है। 18 जुलाई को मतदान होगा और 21 जुलाई को मतगणना होगी। भारतीय निर्वाचन आयोग ने चुनाव कार्यक्रम घोषित करते हुए कहा कि राजनीतिक दल अपने सांसदों और विधायकों को किसी तरह की व्हिप जारी नहीं कर सकते। राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद का कार्यकाल 24 जुलाई 2022 को खत्म हो रहा है। पिछली बार 17 जुलाई 2017 को राष्ट्रपति चुनाव हुए थे। भारत के राष्ट्रपति का चुनाव अनुच्छेद 55 के अनुसार आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के एकल संक्रमणीय मत पद्धति के द्वारा होता है। 25 जुलाई को देश को नया राष्ट्रपति मिल जाएगा।

चुनाव कार्यक्रम 2022

चुनाव अधिसूचना- 15 जून
नामांकन की आखिरी तारीख- 29 जून
नामांकन पत्रों की जांच- 30 जून
नामांकन वापसी अंतिम तिथि-2 जुलाई
मतदान - 18 जुलाई
मतगणना- 21 जुलाई

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

म.प्र. में खरीफ 2022 के लिए प्रमाणित बीज की उपार्जन, विक्रय एवं अनुदान दरें तय

इस वर्ष 10100 रु. क्विंटल मिलेगा सोयाबीन बीज

भोपाल (विशेष प्रतिनिधि)। राज्य शासन ने कृषि उत्पादन आयुक्त की अध्यक्षता में बीज दर निर्धारण समिति की बैठक में हुए निर्णय के मुताबिक खरीफ 2022 के लिए प्रमाणित बीजों की विक्रय उपार्जन एवं अनुदान दरें घोषित कर दी हैं। इसमें राज्य की प्रमुख खरीफ फसल सोयाबीन बीज की दरों में 2600 रूपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है। इससे किसानों को सोयाबीन बीज अब 10100 रू. क्विंटल का मिलेगा। इसके साथ ही उपार्जन दरों में वृद्धि की गई है जिससे किसानों की आय बढ़ सके। शासन द्वारा तिलहनी फसलों के प्रमाणित बीजों के 15 वर्ष अवधि की किस्मों पर बीज वितरण अनुदान देय है तथा 15 वर्ष से अधिक अवधि की किस्मों पर अनुदान नहीं मिलेगा। इसी प्रकार मोटा अनाज, धान एवं दलहनी फसलों के प्रमाणित बीजों के 10 वर्ष तक की अवधि तथा 10 वर्ष से अधिक अवधि किस्मों पर अनुदान देय है। राज्य शासन ने इस वर्ष जैविक धान, मक्का, कोदो-कुटकी एवं अरहर बीजों की दरें भी तय की हैं। इसके तहत जैविक धान बीज किसानों को 5600 रू. क्विंटल मिलेगा जिस पर 2000 रू. क्विंटल अनुदान मिलने के बाद 3600 रू. क्विंटल किसानों को पड़ेगा। इसके साथ ही धान का 3100 रू. क्विंटल जैविक बीज कृषकों से खरीदा जाएगा।

म.प्र. शासन के आदेश के मुताबिक इस वर्ष किसानों को सोयाबीन बीज 10100 रुपये क्विंटल मिलेगा, इस पर 2000 रुपए क्विंटल अनुदान दिया जाएगा, जिससे कृषकों को सोयाबीन बीज 8100 रुपये क्विंटल पड़ेगा तथा 7500 रुपये क्वि. कृषकों से बीज खरीदा जाएगा। जबकि गत वर्ष कृषकों को 2000 रु. अनुदान मिलने के बाद 5500 रुपये क्विंटल सोयाबीन बीज पड़ा था तथा 5100 रुपये क्विंटल बीज किसान से खरीदा गया था।

इसी प्रकार धान सुगंधित किस्म का बीज इस वर्ष 5100 रु. क्विंटल मिलेगा। इस पर 2000 रुपए क्विंटल अनुदान मिलने पर यह 3100 रुपये क्विंटल पड़ेगा तथा किसानों से उपार्जन 2600 रुपए क्विंटल किया जाएगा।

किसानों के लिए उपार्जन, विक्रय एवं अनुदान दर (रु. प्रति क्विंटल में)

फसल	कृषकों के लिए उपार्जन दरें (बोनस सहित)	संस्था की सकल विक्रय दर तथा कृषकों को प्राप्त होने वाले बीज की अंतिम दर (बीज वितरण अनुदान अलग से देय होगा)	प्रमाणित बीज वितरण पर अनुदान की दर जो सीधे कृषकों के खाते में जमा की जायेगी	कृषकों के लिए प्रभावी बीज विक्रय दर
सोयाबीन (15 वर्ष तक की अवधि)	7500	10100	2000	8100
सोयाबीन (15 वर्ष से अधिक अवधि)	7500	10100	–	10100
तिल (15 वर्ष तक की अवधि)	9100	12800	4000	8800
तिल (15 वर्ष से अधिक अवधि)	9100	12800	–	12800
रामतिल (15 वर्ष तक की अवधि)	6950	10600	4000	6600
रामतिल (15 वर्ष से अधिक अवधि)	6950	10600	–	10600
मूंगफली छिलकायुक्त (15 वर्ष तक की अवधि)	5600	8200	4000	4200
मूंगफली छिलकायुक्त (15 वर्ष से अधिक अवधि)	5600	8200	–	8200
धान सुगंधित (10 वर्ष तक की अवधि)	2600	5100	2000	3100
धान सुगंधित (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2600	5100	1000	4100
धान मोटी (10 वर्ष तक की अवधि)	2000	4500	2000	2500
धान मोटी (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2000	4500	1000	3500
धान पतली (10 वर्ष तक की अवधि)	2500	5000	2000	3000
धान पतली (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2500	5000	1000	4000
मक्का (10 वर्ष तक की अवधि)	2000	4600	3000	1600
मक्का (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2000	4600	1500	3100
मक्का हायब्रिड (10 वर्ष तक की अवधि)	9000	11700	3000	8700
ज्वार (10 वर्ष तक की अवधि)	2750	5800	3000	2800
ज्वार (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2750	5800	1500	4300
कोदो (10 वर्ष तक की अवधि)	2500	5500	3000	2500
कोदो (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2500	5500	1500	4000
कुटकी (10 वर्ष तक की अवधि)	3000	6000	3000	3000
कुटकी (10 वर्ष से अधिक अवधि)	3000	6000	1500	4500
मूंग (10 वर्ष तक की अवधि)	7300	10400	5000	5400
मूंग (10 वर्ष से अधिक अवधि)	7300	10400	2500	7900
उड़द (10 वर्ष तक की अवधि)	6450	9500	5000	4500
उड़द (10 वर्ष से अधिक अवधि)	6450	9500	2500	7000
अरहर (10 वर्ष तक की अवधि)	6400	9500	5000	4500
अरहर (10 वर्ष से अधिक अवधि)	6400	9500	2500	7000
जैविक बीज				
धान जैविक (10 वर्ष तक अवधि)	3100	5600	2000	3600
मक्का जैविक (10 वर्ष तक की अवधि)	2500	5100	3000	2100
कोदो जैविक (10 वर्ष तक अवधि)	4600	7650	3000	4650
कुटकी जैविक (10 वर्ष तक अवधि)	4600	7650	3000	4650
अरहर जैविक (10 वर्ष तक अवधि)	6600	9700	5000	4700

उर्वरकों की कालाबाजारी रोकें : श्री शिवराज सिंह

मुख्यमंत्री ने कलेक्टर्स को वीडियो कॉन्फ्रेंस से दिए निर्देश

- पूर्व से संचालित विकास कार्यों पर ध्यान दें
- पेयजल प्रबंधन, उर्वरक वितरण, स्वच्छ सर्वेक्षण जैसे कार्यों को न रोकें

भोपाल। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने पूर्व से संचालित विकास कार्यों और जन-कल्याण से जुड़ी योजनाओं के यथासमय क्रियान्वयन के निर्देश प्रदेश के सभी जिला कलेक्टर को दिए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पंचायत एवं नगरीय निकायों के निर्वाचन के लिए आदर्श आचरण संहिता प्रभावशील होने के बावजूद प्रगतिरत कार्य यथावत जारी रहते हैं। लोकहितकारी योजनाओं के संचालन को संहिता के प्रावधानों का पालन करते हुए जारी रखना है। नई घोषणा या नई प्रशासकीय स्वीकृति न दी जाए, लेकिन पहले से चल रहे कार्यों को न रोका जाए। श्री चौहान मंत्रालय से वीडियो कॉन्फ्रेंस द्वारा प्रदेश के कलेक्टर्स और अन्य अधिकारियों को संबोधित कर रहे थे।

कृषि क्षेत्र

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि खरीफ सीजन में फसलों की बुवाई के लिए कम समय ही उपलब्ध होता है, जिसमें किसान अपने खेतों में बुवाई करते हैं। इस दृष्टि से जून और जुलाई माह खरीफ फसलों की बुवाई और कृषि आदान की व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। प्रदेश में पर्याप्त उर्वरक, बीज उपलब्ध हैं। आवश्यक अग्रिम भंडारण भी किया गया है। कलेक्टर्स आवश्यक उर्वरक उपलब्ध कराए जाएं। प्राकृतिक कृषि और फसलों के विविधीकरण से संबंधित पूर्व से संचालित कार्यों को भी नहीं रोका जाना चाहिए। इसी तरह भारत सरकार द्वारा उर्वरकों पर सब्सिडी की बढ़ाई गई राशि के प्रकाश में कलेक्टर्स कार्यवाही सुनिश्चित करें और यह देखें कि कहीं भी उर्वरकों की कालाबाजारी न हो।

पेयजल प्रबंध और जलाभिषेक अभियान

श्री चौहान ने कहा कि अभी मानसून प्रारंभ नहीं हुआ है। गर्मी के कारण ग्रामीण और नगरीय निकाय क्षेत्रों में पर्याप्त पेयजल की व्यवस्था के लिए उपलब्ध स्त्रोतों या परिवहन के माध्यम से पेयजल उपलब्ध कराया जाए। जल जीवन मिशन के अंतर्गत चालू किए गए कनेक्शन में निरंतर जल आपूर्ति होती रहे। हैण्डपम्प सुधार कार्य और संधारण के लिए भी प्रयास हों। जलाभिषेक अभियान में प्रारंभ किए गए और जून 2022 तक लक्षित कार्यों को मानसून के पहले पूर्ण कर लिया जाये।

श्रीमती प्रीति मैथिल अपर सचिव मुख्यमंत्री बनीं

भोपाल। राज्य शासन ने संचालक कृषि एवं प्रबंध संचालक बीज निगम श्रीमती प्रीति मैथिल को अपर सचिव मुख्यमंत्री पद पर पदस्थ किया है। उनके पास अब संचालक कृषि का अतिरिक्त प्रभार रहेगा। वहीं मंडी बोर्ड के प्रबंध संचालक श्री विकास निरवाल को बीज निगम के प्रबंध संचालक का प्रभार अतिरिक्त रूप से सौंपा गया है।

प्रदेश में 2 लाख 25 हजार मीट्रिक टन मूंग खरीदी होगी

प्रदेश में वर्ष 2022-23 में 4 लाख 3 हजार मीट्रिक टन मूंग और 27 हजार मीट्रिक टन उड़द के प्रस्तावित उपार्जन से संबंधित प्रस्ताव केन्द्र सरकार को भेजा गया था। केन्द्र सरकार ने मूंग के लिए 2 लाख 25 हजार 525 मीट्रिक टन और उड़द के लिए 21 हजार 400 मीट्रिक का उपार्जन लक्ष्य दिया है।

यह जानकारी मंत्रालय में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में हुई बैठक में दी गई।

श्री चौहान ने प्रदेश में वर्ष 2021-22 में उपार्जित मूंग और उड़द के संबंध में भी जानकारी ली। प्रदेश में पिछले वर्ष 4 लाख 39 हजार 563 मीट्रिक टन मूंग की खरीदी 301 केन्द्रों से की गई।

खरीफ के लिए कुल 25.90 लाख क्विंटल बीज की व्यवस्था

प्रदेश में खरीफ 2022 के लिए धान, मक्का, ज्वार, बाजारा, कोदो-कुटकी, उड़द, मूंग, तुअर, सोयाबीन, मूंगफली, तिल, रामतिल और कपास की कुल 25.90 लाख क्विंटल बीज की व्यवस्था की गई है।

उक्त बैठकों में वित्त मंत्री श्री जगदीश देवड़ा, कृषि मंत्री श्री कमल पटेल, सहकारिता मंत्री श्री अरविंद सिंह भदौरिया, मुख्य सचिव श्री इकबाल सिंह बैंस, कृषि उत्पादन आयुक्त श्री शैलेन्द्र सिंह, अपर मुख्य सचिव कृषि श्री अजीत केसरी, प्रमुख सचिव सहकारिता श्री के.सी गुप्ता और मार्कफेड के एमडी श्री पी. नरहरि उपस्थित थे।

जे. के. पेपर लिमिटेड
यूनिट : सीपीएम, फोर्ट, सोनगढ़, जिला-तापी (गुजरात)

सुबबूल खेती की भव्य योजना

- एक एकड़ से 18 महीने में एक लाख का शुद्ध मुनाफा।
- 3600/- रुपये प्रति टन कंपनी द्वारा खरीदी का अनुबंध।
- 30-40 टन प्रति एकड़ सुबबूल का उत्पादन।
- कटाई और ढुलाई का खर्च कंपनी वहन करेगी।
- कंपनी द्वारा समय-समय पर मुफ्त मार्गदर्शन।

सौ वर्ष पूर्व स्थापित जे. के. संगठन कागज, सीमेंट, टायर, हाइब्रिड बीज, फेनर बेल्ट, डेयरी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहा है। 1962 में आरंभ हुई जे. के. पेपर मिल, जे. के. संगठन का ही एक हिस्सा है। जे. के. पेपर मिल्स को प्रति वर्ष 6 लाख टन कच्चे माल (सुबबूल की लकड़ी) की आवश्यकता होती है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
विपिन चौहान : 9009485410 डॉ. सुधीर कुमार : 9328924027

म.प्र. में सिंगल सुपर फास्फेट की दरें 55 प्रतिशत बढ़ी

भोपाल। म.प्र. में बहुप्रतिक्षित सिंगल सुपर फास्फेट (एसएसपी) की दरें निर्धारित कर दी गई हैं। ये दरें खरीफ 2022 के लिये निर्धारित की गई हैं। इसमें एसएसपी पावडर की रबी 2021-22 की दर 274.50 रु. की तुलना में 55 प्रतिशत बढ़ाकर 425 रु. प्रति बोरी निर्धारित की गई है जबकि दानेदार एसएसपी की रबी 2021-22 की दर 304.50 रु. प्रति बोरी से बढ़ाकर 465 रु. प्रति बोरी निर्धारित की गई है। उक्त दरें नये स्टॉक पर ही लागू होगी।

उर्वरक उद्योग के सूत्रों के अनुसार वर्तमान में बाजार में डीएपी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। लेकिन सहकारी समितियों की तुलना में निजी क्षेत्र में डीएपी उपलब्धता अधिक है। बाजार में डीएपी लगभग 1400 रु. प्रति बोरी की दर पर उपलब्ध हो रहा है। ऐसे में किसानों के बीच महँगे एसएसपी की स्वीकार्यता कितनी होगी। यह भविष्य में ही पता चलेगा। संभवत: इसी संशयपूर्ण स्थिति के कारण सिंगल सुपर फास्फेट निर्माताओं ने नई दरों पर अपनी सहमति नहीं दी है।

खरीफ 2022 के लिए सिंगल सुपर फास्फेट उर्वरकों की नगद विक्रय दरें

उर्वरक	कृषकों के लिए विक्रय दर रुपये प्रति बोरी
सिंगल सुपर फास्फेट (पाउडर)	425
सिंगल सुपर फास्फेट (दानेदार)	465
बोरानेटेड सिंगल सुपर फास्फेट (पाउडर)	456.5
बोरोनेटेड सिंगल सुपर फास्फेट (दानेदार)	498.5

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं **प्रधान संपादक विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं पेपर प्रिंट इंडस्ट्रीज, 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

अब कृषक जगत वेबसाइट पर भी उपलब्ध
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है, वही दूसरे के क्रोध से बच सकता है। - सुकरात

अच्छे उत्पादन की प्रथम सीढ़ी 'बीज'

खेती के विभिन्न आदानों में बीज विशेष होता है और उस बीज के मद में लागत भी सबसे अधिक होती है। मसाला फसल, औषधि फसल, नगदी फसलों के बीज पर तो कुल लागत का 75 प्रतिशत तक खर्च केवल बीज पर किया जाता है। उल्लेखनीय है कि इस कीमती बीज पर अनेकों प्रकार की फफूंदी उसके आवरण के साथ रहती है और यदि बीज का ढंग से उपचार ना किया गया हो तो ये फफूंदी बीज के साथ भूमि के भीतर भी पहुंच जाती है और विभिन्न प्रकार के रोगों के विस्तार में सक्रिय हिस्सा लेती है। बीजोपचार से यह माना जाता है कि आपने जिस बीज को उपचारित करके खेत में डाला है उसके जीवन का जीवन बीमा हो चुका है। उपचारित बीज अच्छा अंकुरण देगा भूमि के भीतर की फफूंदी पर भी रोक लगायेगा अच्छे अंकुरण से सीधा-सीधा रिश्ता है। अच्छे उत्पादन की प्रथम सीढ़ी की सफलता से पार करना और रोगों की प्रारंभिक अवस्था पर नकेल कसना होता है। खरीफ की मुख्य फसलों में सोयाबीन, धान, कपास, मक्का, ज्वार, अरहर एवं लघु धान्य विशेषकर होते हैं इसके अलावा दलहनी फसलों में मूंग, उड़द तिलहनी में तिल, रामतिल और सूर्यमुखी भी कुछ क्षेत्र में लगाई जाती है इन सभी फसलों के बीज का उपचार उसके अंकुरण के लिये प्राथमिकता से किया जाना जरूरी क्रिया होगी। सोयाबीन के पतले छिलके में अनेकों प्रकार की फफूंदी होती है जिनको हटाकर अच्छा अंकुरण पाना

जरूरी है। सोयाबीन के बीज पर सर्वप्रथम फफूंदनाशी फिर कल्चर और उसके बाद पी.एस.बी. का उपचार करना बहुत जरूरी है। इस वर्ष की स्थिति में तो इसका महत्व और बढ़ गया है क्योंकि अधिकांश बीज बाहर से लाया जा रहा है। कृषक स्वयं अपना बीज ला रहा है। पर बीज की कुंडली से कृषक अनभिज्ञ है। इस कारण उस महंगे दाम से खरीदे बीज की आवभगत अच्छी तरह की जाये उसे तीन तरह के उपचारों से लैस करके भूमि में डाला जाये ताकि अनजाने रोगों पर प्राथमिक प्रतिबंध लग सके। ध्यान रहे सोयाबीन के बीज का अंकुरण प्रतिशत सामान्य रूप से कम होता है और यदि उसे अनुपचारित कर लगाया जाये तो अंकुरण बुरी तरह से प्रभावित होगा। धान के बीजों पर भी फफूंदी रहती है। सबसे पहले तो उसका उपचार 17 प्रतिशत नमक के घोल में किया जाये। 17 ग्राम नमक/लीटर पानी में घोल बनाकर उसमें बीज डालें। उतराते बीज को हटाकर तली में बैठे भारी बीजों को उपचार के बाद निकालकर अच्छे पानी में धोकर छाया में सुखाकर फिर फफूंदनाशी से उपचारित करके ही उनकी बुआई की जाये। कपास में पहले गंधक के अम्ल के उपचार की जरूरत होती थी परंतु बी.टी. कपास के बीज की उपलब्धि से अब यह समस्या नहीं रही। अन्य खाद्यान्नों, तिलहनी, दलहनी फसलों के बीजों का उपचार भी यथा प्रस्तावित किया जाना जरूरी है। बरसात के मौसम में भूमि में वातावरण में पर्याप्त नमी उपलब्ध होने के कारण विभिन्न प्रकार की फफूंदी की सक्रियता पर अधिक असर पड़ता है वे अधिक तेजी से पलती-पुस्ती रहती है तथा फसलों को नुकसान पहुंचाती है। इसीलिये बीजोपचार को सफल खेती की कुंजी भी कहा गया है। इस कारण कृषकों को सलाह दी जाती है कि अपने बीज का उपचार कर उसे सुरक्षित करें और लक्षित उत्पादन के सपने को साकार बनायें।

खुशहाल खेती का मंत्र : 'खेत एक, फसलें अनेक'

● पवन नागर

ओमीक्रॉन बहुत से देशों में तेजी से फैलता जा रहा है और वह भी तब, जब अधिकतर देशों में शत-प्रतिशत वैक्सीनेशन हो चुका है। तो क्या अब हम यह मानकर चलें कि इंसान के शरीर में इतनी ताकत नहीं रही कि वह किसी भी रोग से लड़ सके? क्या इंसानी शरीर पर आधुनिकता के दुष्प्रभाव दिखने लगे हैं? क्या हमारा भोजन पहले जैसा पौष्टिक और शुद्ध नहीं रहा? क्या हम पैसों के लालच में गुणवत्ता-युक्त खाद्य-सामग्री का उत्पादन करना भूल गए हैं? क्या हमें सिर्फ दवाईयों के दम पर ही ज़िन्दा रहना पड़ेगा? क्या हम कोरोना जैसी महामारियों से बच पाएँगे? ये कुछ ऐसे सवाल हैं जिनके उत्तर हम सबको खोजने ही पड़ेंगे, अन्यथा हम आगे आने वाली पीढ़ी को जवाब देने लायक नहीं रहेंगे। इसलिए जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी इन प्रश्नों के बारे में गंभीरता से सोचना शुरु करें। हमें अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होना पड़ेगा और इस आधुनिक जीवनशैली में बदलाव करना पड़ेगा, ताकि हमारा शरीर पहले जैसा मज़बूत हो सके, इसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता पहले जैसी हो सके।

हमारे शरीर की मजबूती और हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता पर सबसे ज़्यादा प्रभाव पड़ता है, हमारे द्वारा लिए जाने वाले आहार का। अन्न को यूँ ही ब्रह्म नहीं कहा गया है। हमारे अस्तित्व के सात तलों में से जो पहला तल है, यानी कि हमारा भौतिक शरीर, उसे योग की भाषा में 'अन्नमय कोष' कहते हैं। जो अन्न या आहार से बनता हो, वह होता है 'अन्नमय कोष', यानी कि हमारा भौतिक शरीर। हम समझ सकते हैं कि शुद्ध और पौष्टिक आहार की अपने शरीर को स्वस्थ व ऊर्जावान बनाए रखने में क्या अहमियत है।

सबसे पहले हमें इस बात पर विचार करना है कि हमारे परिवार को शुद्ध, सात्विक एवं पौष्टिक भोजन कैसे प्राप्त हो। अभी समय के अभाव और आधुनिकता के कारण हम 'फास्ट फूड' अधिक ले रहे हैं जो कि हमारे शरीर के लिए बिल्कुल भी सही नहीं है। वहीं दूसरी ओर हम जो फल, सब्ज़ी और अनाज खा रहे हैं उनको उगाने और पकाने में इतना केमीकल इस्तेमाल किया जा रहा है कि हमारा पूरा भोजन ही जहरयुक्त हो चुका है। इसको खाकर हम दिन-प्रतिदिन बीमार होते जा रहे हैं और हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता इतनी कमजोर हो चुकी है कि हमारा शरीर किसी भी रोग से दो दिन भी नहीं लड़ पाता, हमें तुरंत ही डॉक्टर के पास भागना पड़ता है।

अब वक्त है संभल जाने का। बेहतर होगा कि जल्द-से-जल्द आप खेती के अपने वर्तमान तरीके को बदल लें और वापस अपने पूर्वजों के तौर-तरीकों को अपना लें, यानी कि फिर से बिना खर्चे की और बिना ज़हर वाली बहुफसली खेती अपना लें।

इसी बहुफसली प्रणाली में सभी समस्याओं का हल है। हमें एकल फसल प्रणाली और रसायनिक खेती से छुटकारा पाने के लिए लड़ना होगा, तभी हमारी समस्याओं का हल निकलेगा। अधिक-से-अधिक फसलें अपने खेत में लगाएँ और रसायनिक खादों व कीटनाशकों की जगह देशी खाद व प्राकृतिक कीटनाशकों का उपयोग करें।

अभी रसायनिक खादों व कीटनाशकों का अंधाधुंध इस्तेमाल किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप आज गाँव-गाँव तक कैंसर जैसी बीमारी ने पैर पसार लिए हैं। वहीं दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन

की एक नई समस्या से भी हमें दो-दो हाथ करना पड़ रहा है। रसायनिक खेती के कारण हम सिर्फ उत्पादन के लालच में एक या दो फसलों तक ही सीमित हो गए हैं। और भारत में यह स्थिति है कि 'एकल फसल प्रणाली' के कारण किसान अपने परिवार की जरूरत का अनाज भी अपनी जमीन से पैदा नहीं कर पा रहा है, उसे अपने परिवार की खाद्य सामग्री के लिए भी बाजार जाना पड़ रहा है।

रसायनिक खादों-दवाओं-कीटनाशकों की भरपूर मात्रा से विपुल पैदावार करने वाली 'हरित क्रांति' ने अब अपने पैदा किए खतरों को उजागर करना शुरु कर दिया है। एक जमाने में कभी-कभार होने वाली कैंसर जैसी बीमारी अब घर-घर का संकट बन गई है। ऐसे में क्या वापस पुरानी कृषि-पद्धतियों की तरफ लौटना मुनासिब नहीं होगा?

इसका हल यही है कि हमें 'बहुफसली प्रणाली' या मिश्रित खेती को अपनाना होगा, जिसमें पहले अपने परिवार की जरूरत की सभी फसलों का उत्पादन करना होगा। साथ ही रासायनिक खादों व कीटनाशकों का पूर्णतः बहिष्कार करना होगा। हमें फिर से अपने खेत में ज्वार, बाजरा, जौ, मक्का, रागी, अलसी, चना, मसूर, धनिया, मूंगफली एवं हर उस फसल का उत्पादन करना होगा जो हमारा परिवार इस्तेमाल करता है। हम सब को प्रकृति का सहायक बनना है, उसका दुश्मन नहीं। 'एकल फसल प्रणाली' से तौबा कर लें और प्रकृति की रक्षा करने वाली प्राकृतिक खेती की शुरुआत करें। हमेशा याद रखें कि 'खेत एक, फसलें अनेक' से ही होगा, कृषि में परिवर्तन। सिर्फ एकल फसल से कृषि में परिवर्तन नहीं होने वाला, क्योंकि हम किसान होकर भी यदि अनाज के मामले में आत्मनिर्भर नहीं हैं और खुद जहरयुक्त अनाज खा रहे हैं तो फिर हम पूरे विश्व को कैसे स्वस्थ रख पाएँगे। इसलिए हमें अभी से जहरमुक्त खेती की ओर कदम बढ़ाना होगा, प्राकृतिक खेती करनी होगी, क्योंकि 'जब होगा जहरमुक्त अनाज हमारा, तब होगा जहरमुक्त समाज हमारा।'

अगर आप यह सोच रहे हैं कि इस तरह की खेती मुनाफा नहीं देगी तो आप बिल्कुल गलत सोच रहे हैं। अपना स्मार्टफोन उठाकर देखिए, इंटरनेट प्राकृतिक खेती करके बड़ा मुनाफा कमाने वालों की दास्तानों से भरा पड़ा है। आने वाले समय में भाँति-भाँति के और जहरमुक्त भोज्य पदार्थों की भारी माँग खड़ी होने वाली है। जो कोई अभी से खुद को इस माँग की आपूर्ति करने के लिए तैयार कर लेगा वह जमकर लाभ कमाएगा और जो इस बदलाव से अछूता रहेगा वह बाजार से बाहर हो जाएगा।

जल संकट, जलवायु परिवर्तन और आए दिन आने वाली नई बीमारियों से बचने, अपनी आने वाली पीढ़ियों को सलामत रखने और खेती को मुनाफे का धंधा बनाने के लिए बिना खर्चे की 'प्राकृतिक खेती' और 'खेत एक, फसलें अनेक' का मंत्र जपना जरूरी है। यही फिलहाल समय की मांग है और इसी में हम सबकी सभी समस्याओं और सभी प्रश्नों के हल छिपे हुए हैं। (सप्रेस)

◆ 46 साल पूर्व इस सप्ताह ◆ कृषक जगत

(कृषक जगत : 14 जून 1976 के अंक से)

समाचार

- कृषक बोनी की तैयारी में व्यस्त, वसूली लक्ष्य पूर्ण
- 100 रुपये तक आय वाले गरीबों को उधार मिलेगा
- भूमि विकास निगम व मत्स्य विकास निगम स्थापित होंगे
- पटना में 1400 कमरे वाला किसान भवन
- कृषि मंत्री श्री जगजीवनराम द्वारा कंदमूल की उपज पर सुझाव
- उर्वरक की कीमत में और कमी नहीं : कृषि एवं सिंचाई मंत्री श्री जगजीवनराम
- वर्ष 1975-76 में देश में 11 करोड़ 40 लाख टन अनाज का उत्पादन
- बीज कार्यक्रम के लिए विश्व बैंक से ढाई करोड़ डॉलर

आलेख

- ज्वार : विदिशा 60-1 उगाइये और हरे चारे की अधिकतम मात्रा पाइये

गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स कं. लि. का विज्ञापन

रागी की खेती कैसे करें

● गोवर्धन लाल कुम्हार ● अमित कुमार
● देवी लाल धाकड़
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

रागी की खेती मोटे अनाज के रूप में की जाती है। रागी मुख्य रूप से अफ्रीका और एशिया महाद्वीप में उगाई जाती है। जिसको मडुआ, अफ्रीकन रागी, फिंगर बाजरा और लाल बाजरा के नाम से भी जाना जाता है। इसके पौधे पूरे साल पैदावार देने में सक्षम होते हैं। इसके पौधे सामान्य तौर पर एक से डेढ़ मीटर तक की ऊंचाई के पाए जाते हैं। इसके दानो में खनिज पदार्थों की मात्रा बाकी अनाज फसलों से ज्यादा पाई जाती है इसके दानों का इस्तेमाल खाने में कई तरह से किया जाता है। इसके दानों को पीसकर आटा बनाया जाता है। जिससे मोटी डबल रोटी, साधारण रोटी और डोसा बनाया जाता है। इसके दानों को उबालकर भी खाया जाता है।

उपयुक्त मिट्टी

रागी की खेती कई तरह की उपजाऊ और कार्बनिक पदार्थों से भरपूर मिट्टी में की जा सकती है। लेकिन इसके अच्छे उत्पादन के लिए बलुई दोमट मिट्टी को सबसे उपयुक्त माना जाता है। इसकी खेती के लिए भूमि में जलभराव नहीं हो। क्योंकि जलभराव होने की वजह से इसके पौधे खराब हो जाते हैं। इसकी खेती के लिए भूमि का पीएच मान 5.5 से 8 के बीच हो।

खेत की तैयारी

रागी की रोपाई के लिए भुरभुरी मिट्टी को अच्छा माना जाता है। क्योंकि भुरभुरी मिट्टी में इसके बीजों का अंकुरण अच्छे से होता है। रागी की खेती के लिए शुरुआत में खेत की तैयारी के दौरान खेत में मौजूद पुरानी फसलों के अवशेषों को नष्ट कर खेत की मिट्टी पलटने वाले हलों से गहरी जुताई कर दें। उसके बाद कुछ दिन खेत को खुला छोड़ दें। ताकि सूर्य की धूप से मिट्टी में मौजूद हानिकारक कीट नष्ट हो जाएं। खेत को खुला छोड़ने के बाद खेत में जैविक खाद के रूप में पुरानी गोबर की खाद को डालकर उन्हें अच्छे से मिट्टी में मिला दें। खाद को मिट्टी में मिलाने के लिए खेत की कल्टीवेटर के माध्यम से दो से तीन तिरछी जुताई कर दें।

खाद को मिट्टी में मिलाने के बाद खेत में पानी चलाकर खेत का पलेवा कर दें। पलेवा करने के तीन से चार दिन बाद जब जमीन की ऊपरी सतह हल्की सूखी हुई दिखाई देने लगे तब फिर से खेत की जुताई कर दें। उसके बाद खेत में रोटावेटर चलाकर मिट्टी को भुरभुरा बना लें। मिट्टी को भुरभुरा बनाने के बाद खेत में पाटा लगाकर भूमि को समतल कर दें। ताकि बारिश के मौसम में जलभराव जैसी समस्या का सामना ना करना पड़ें।

उन्नत किस्में

रागी की बाजार में काफी उन्नत किस्में मौजूद हैं। जिन्हें कम समय में अधिक पैदावार देने के लिए तैयार किया गया है।

जेएनआर 852, जीपीयू 45, चिलिका , जेएनआर 1008, पीइएस 400, वीएल 149, आरएच 374 उन्नत किस्में हैं। इनके अलावा और भी कई किस्में हैं जिनमें जेएनआर 981, भैरवी, शुव्रा, अक्षय, पीआर 202, एमआर 374, जेएनआर 852 और केएम 65 जैसी काफी किस्में मौजूद हैं।

बीज की मात्रा और उपचार

रागी की रोपाई के लिए बीज की मात्रा बुवाई की विधि पर निर्भर करती हैं। ड्रिल विधि से रोपाई के दौरान प्रति हेक्टेयर 10 से 12 किलो बीज की जरूरत होती है। जबकि छिड़काव विधि से रोपाई के दौरान लगभग 15 किलो बीज की जरूरत पड़ती है। इसके बीज को खेत के लगाने से पहले उसे उपचारित कर लें. बीजों को उपचारित करने के लिए थीरम, बाविस्टीन या कैप्टन दवा का इस्तेमाल करें।

बीज रोपाई का तरीका और समय

ड्रिल विधि से पंक्तियों में रोपाई : रागी के बीजों की रोपाई छिड़काव और ड्रिल दोनों तरीकों से की जाती है। छिड़काव विधि से इसकी बुवाई के दौरान इसके बीजों को समतल की हुई भूमि में किसान भाई छिड़क देते हैं। उसके बाद बीजों को मिट्टी में मिलाने के लिए कल्टीवेटर के पीछे हल्का पाटा बांधकर खेत की दो बार हल्की जुताई कर देते हैं। इससे बीज भूमि में लगभग तीन सेंटीमीटर नीचे चला जाता है। ड्रिल विधि से बिजाई के दौरान इसके बीजों को मशीनों की सहायता से कतारों में लगाया जाता है। कतारों में इसकी रोपाई के दौरान प्रत्येक कतारों के बीच लगभग एक फिट दूरी हो। और कतारों में बोये जाने वाले बीजों के बीच 15 सेंटीमीटर के आसपास दूरी हो। रागी के बीजों की दोनों विधि से रोपाई करने के दौरान इसके बीजों को भूमि में तीन से पांच सेंटीमीटर की गहराई में उगायें। इससे बीजों का अंकुरण अच्छे से होता है।

रागी की खेती खरीफ की फसलों के साथ की जाती है। इस दौरान इसके पौधों की रोपाई मई के आखिर से जून माह तक की जाती है। इसके अलावा कई ऐसी जगह हैं जहां इसकी रोपाई जून के बाद भी की जाती है। और कुछ लोग इसे जायद के मौसम में भी उगाते हैं।

पौधों की सिंचाई

रागी के पौधों को सिंचाई की ज्यादा जरूरत नहीं होती। क्योंकि इसकी खेती बारिश के मौसम में की जाती है। और इसके पौधे सूखे को काफी समय तक सहन कर सकते हैं। अगर बारिश के मौसम में बारिश समय पर ना हो तो पौधों की पहली सिंचाई रोपाई के लगभग एक से डेढ़ महीने बाद कर दें। इसके अलावा जब पौधे पर फूल और दाने आने लगे तब उनको नमी की ज्यादा जरूरत होती है। इस दौरान इसके पौधों की 10 से 15 दिन के अंतराल में दो से तीन बार सिंचाई कर दें। इससे बीजों का आकार अच्छे से बनता है। और उत्पादन भी अधिक प्राप्त होता है।

उर्वरक की मात्रा

रागी के पौधों को उर्वरक की ज्यादा जरूरत नही होती। इसकी खेती के लिए शुरुआत में खेत की तैयारी के वक्त लगभग 12 से 15 गाड़ी पुरानी गोबर की खाद को खेत में डालकर अच्छे से मिट्टी में मिला दें। इसके अलावा रासायनिक खाद के रूप में डेढ़ से दो बोरे एनपीके की मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की आखिरी जुताई के वक्त खेत में छिड़ककर मिट्टी में मिला दें।

खरपतवार नियंत्रण

रागी की खेती में खरपतवार नियंत्रण रासायनिक और प्राकृतिक दोनों तरीकों से किया जाता हैं। रासायनिक तरीके से खरपतवार नियंत्रण के लिए बीज रोपाई के पहले आइसोप्रोट्यूरॉन या ऑक्सीफ्लोरफेन की उचित मात्रा का छिड़काव खेत में कर दें। जबकि प्राकृतिक तरीके से खरपतवार नियंत्रण पौधों की निराई गुड़ाई कर किया जाता है। इसके लिए शुरुआत में पौधों की रोपाई के लगभग 20 से 22 दिन बाद उनकी पहली गुड़ाई कर दें। रागी की खेती में प्राकृतिक तरीके से खरपतवार नियंत्रण के लिए दो बार गुड़ाई काफी होती है। इसलिए पहली गुड़ाई के लगभग 15 दिन बाद पौधों की एक बार और गुड़ाई कर दें।

फसल की कटाई और मढ़ाई

रागी के पौधे बीज रोपाई के लगभग 110 से 120 दिन बाद कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। जिसके बाद इसके सिरों को पौधों से काटकर अलग कर लें। सिरों की कटाई करने के बाद उन्हें खेत में ही एकत्रित कर कुछ दिन सूखा लें। उसके बाद जब दाना अच्छे से सूख जाए तब मशीन की सहायता से दानो को अलग कर एकत्रित कर बोरो में भर लें।

पैदावार और लाभ

रागी की विभिन्न किस्मों की प्रति हेक्टेयर औसतन पैदावार 25 क्विंटल के आसपास पाई जाती है। जिसका बाज़ार भाव 2700 रूपये प्रति क्विंटल के आसपास पाया जाता है। इस हिसाब से किसान एक बार में एक हेक्टेयर से 60 हजार रूपये तक की कमाई आसानी से कर लेता है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

मिर्च की खेती ऐसे करें पाएं अधिक उत्पादन

जलवायु

मिर्च की सफल खेती के लिये गर्म एवं आर्द्र जलवायु सर्वोत्तम। 20 से 25 डिग्री सेल्सियस तापमान मिर्च की खेती के लिये उपयुक्त माना गया है। 625 से 750 मिली मीटर वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र मिर्च खेती के लिये उत्तम माने गये हैं। मृदा की पीएच 6 से 7.5 मिर्च के लिये सर्वोत्तम है।

खेत की तैयारी

● गर्मियों में एक गहरी जुताई करें। इससे खेत के अंदर हानिकारक कवक व जीवाणु के अंडे गहरी जुताई से ऊपर आ जायेंगे और वातावरण के अधिक तापमान से नष्ट हो जायेंगे।

● गहरी जुताई के बाद दो बार कल्टीवेटर अथवा हैरो चलायें।

● खेत को समतल करने के लिये एक बार पाटा चलायें। बीज की मात्रा व दर–बीज की मात्रा 400–500 ग्राम प्रति हे., हाईब्रिड जातियों के लिये 200–250 ग्राम प्रति हेक्टेयर.

जातियां

पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, जवाहर मिर्च 218, एनपी 46 ए, कल्याण फुड, चंचल, अर्का मोहिनी, अर्का बसंत, भारत इत्यादि।

बुवाई समय

मिर्च की बुवाई सामान्यतः जून महीने से लेकर सितम्बर के महीने तक की जाती है। अधिक पैदावार लेने के लिये सर्वोत्तम समय जुलाई–अगस्त है। अगस्त माह में की गई बुवाई से मिर्च के पौधे अधिक फैलाव, अधिक ऊंचाई व जल्दी फूल आते हैं।

बुवाई विधि

मिर्च की फसल को सामान्यतः किसान प्रवाहित सिंचाई में लगाते हैं लेकिन मिर्च की फसल को ड्रिप इरिगेशन पद्धति से लगाकर किसान प्रति हेक्टेयर अधिक उपज ले सकता है।

नर्सरी

● मिर्च नर्सरी की क्यारी की लम्बाई 3 मीटर, चौड़ाई 1 मीटर व ऊंचाई 0.2 मी. की क्यारी बनायें।

● नर्सरी क्यारी के अंदर उचित मात्रा में गोबर की खाद मिलाएं।

● 2–3 दिन बाद नर्सरी क्यारी की सिंचाई करें जिससे खाद व दवा जमीन में अच्छी तरह मिल जाये।

● नर्सरी में लाइन से लाइन की दूरी 5 सेमी रखें। जिससे बीज का ज्यादा अंकुरण होगा तथा नर्सरी में खरपतवार व रोग कम आयेंगे।

● क्यारी को चावल के भूसे से ढक दें जिससे अंकुरण जल्दी होगा।

● क्यारी को प्रतिदिन हल्की सिंचाई दें।

नर्सरी में पादप संरक्षण

● नर्सरी रोपण के 15 दिन बाद 1 ग्राम थायोमिथाक्सम, 3 ग्राम रिडोमिल एक लीटर पानी में मिलाकर पौधे में ड्रेसिंग करें जिससे मिर्च की नर्सरी में फैलने वाली डेम्पिंग ऑफ और जड़ सड़न व रस चूसने वाले कीड़ों से निजात मिलेगी।

● यह प्रक्रिया नर्सरी के अंदर दोबारा 25 दिन व 35–40 दिन पर अवश्य करें।

खाद व रसायनिक उर्वरक

उर्वरकों का उपयोग मृदा जांच के अनुसार करें. यदि मृदा जांच न हो सके तो उस स्थिति में प्रति हेक्टेयर इस प्रकार उर्वरक डालें।

साधारण विधि

सामान्य विधि से मिर्च की फसल में 30 टन प्रति हेक्टेयर गोबर खाद आखिरी बुवाई के समय खेत में दें।

ड्रिप पद्धति से

ड्रिप पद्धति से मिर्च की फसल लगाकर किसान रसायनिक उर्वरक का बेहतर ढंग से उपयोग ले सकता है। तथा प्रति हेक्टेयर साधारण विधि से 30–35% उर्वरक कम लगता है। ड्रिप पद्धति से बुवाई के समय 130 किलोग्राम यूरिया, 500 किलो सिंगल सुपर फास्फेट, 160 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटाश, 15–20 किलो सल्फर व 10 किग्रा माइक्रोन्यूट्रेंट प्रति हेक्टेयर दें।

ड्रिप इरिगेशन पद्धति से मिर्च लगाने के फायदे

● 50–60 प्रतिशत पानी की बचत होती है जिससे किसान कम पानी होने पर भी आसानी से मिर्च की खेती कर सकता है।

● रोग व रस चूसने वाले कीड़ों का प्रभाव कम होता है तथा ड्रिप पद्धति से दवाओं का उचित उपयोग होने से रोग व रस चूसने वाले कीड़ों से फसल को आसानी से बचाया जा सकता है।

● ड्रिप पद्धति से उर्वरक देकर अधिक उपज ले सकते हैं इससे 30–35 प्रतिशत तक उर्वरक खर्च बचता है।

● ड्रिप पद्धति से मिर्च की फसल में कम मजदूरों की आवश्यकता पड़ती है।

हल्दी की ये किस्में देती ज्यादा मुनाफा

भूमि

हल्दी की खेती जीवांश युक्त रेतीली या दोमट मटियार मिट्टी में उचित जल निकास की व्यवस्था का होना नितान्त आवश्यक है भारी मृदाओं में, जहां जल निकास का उचित प्रबंध नहीं होता है। वहां पर हल्दी की खेती मेड़ों पर की जाती है हल्दी के लिए पर्याप्त उर्वर भूमि की आवश्यकता होती है इसकी खेती के लिये तालाब के जल द्वारा सिंचित काली मिट्टी उपयुक्त रहती है उन मृदाओं में जहां पर जंगली किस्में उगती पाई जाती हैं, मृदा प्रायः लाल चिकनी या मटियार दोमट होती है इन मृदाओं में पत्तियों की खाद अधिक पाई जाती है, ऊसर या क्षारीय मृदाओं में इसकी खेती सफलतापूर्वक नहीं की जा सकती लेकिन मृदा में थोड़ी बहुत अम्लीयता का पाया जाना हल्दी के लिये अच्छा रहता है भूमि का पी.एच. मान 5–6 हो और भूमि की सतह कठोर हो।

खेत की तैयारी

मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करने के बाद 3–4 बार देशी हल या कल्टीवेटर चला दें यदि ऐसा संभव नहीं हो तो 5–6 बार देशी हल से जुताई कर दें ढेलों और खरपतवारों को नष्ट कर दें जुताई के बाद पाटा चलायें जिससे खेत में नमी सुरक्षित रहे, अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में खेत तैयार करने के उपरांत मेड़ें और नालियां बनाई जाती हैं।

रोपण समय

हल्दी के रोपण का उचित समय अप्रैल एवं मई होता है। हल्दी की बुवाई मानसून के ऊपर निर्भर करती है वर्षा के अनुसार इसकी बोवाई अप्रैल के दूसरे पखवाड़े से लेकर जुलाई के प्रथम सप्ताह तक की जाती है।

उपयुक्त किस्में

सीओ1, सुगंधा, सुवर्णा, सुरोमा, सुगना, कृष्ण, बीएसआर।

बीज बुवाई

हल्दी की बुवाई मानसून के ऊपर निर्भर करती है वर्षा के अनुसार इसकी बुवाई अप्रैल के दूसरे पखवाड़े से लेकर जुलाई के प्रथम सप्ताह तक की जाती है।

बीज

बीज के लिये हल्दी की गांठें पिछली फसल से ली जाती हैं, बोने के लिये केवल प्राथमिक घनकंद बड़े आकार के और सुविकसित आंखों वाले हो अधिक लम्बा होने पर घनकंदों को छोटे–छोटे टुकड़ों में एक या दो सुविकसित आंखें अवश्य हो।

बीज मात्रा

बीज की मात्रा घनकंदों के आकार व बोने की विधि पर निर्भर करती है। यदि मिलवां फसल बोई जाती है तो 8–10 क्विंटल घनकंद प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होते हैं जबकि शुद्ध बोई जाने वाली फसल के लिए 12–14 क्विंटल घनकंद पर्याप्त होते हैं। घनकंद बोने के लगभग 1 महीने बाद अंकुरित हो जाते हैं जबकि सिंचित भूमि में अंकुरण 15–20 दिन में हो जाता है।

सिंचाई एवं जल निकास

हल्दी की फसल को अधिक सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है बुवाई से वर्षा ऋतु आरम्भ होने तक 4–5 सिंचाइयों के लिए पर्याप्त नमी का होना अति आवश्यक है, यदि मेड़ों में नमी होने पर शीघ्र ही फसल भूमि को ढंक लेती है और वर्षा ऋतु के उपरांत प्रत्येक 20–25 दिन के अंतर पर सिंचाईयां करना लाभप्रद होता है। नवम्बर में पत्तियों का विकास होता है और घनकंद भी मोटाई में बढ़ना प्रारंभ हो जाते हैं। इस समय मेड़ों पर मिट्टी चढ़ा देना लाभदायक होता है। हल्दी की फसल में जल्द निकास होना बहुत जरूरी है। खेत में पानी भरे रहने से घनकंदों का विकास सुचारू रूप से नहीं हो पाता उचित जल निकास के लिए 50 से.मी. चौड़ी और 60 से.मी. गहरी नाली बना दी जाती है।

उपज

सिंचित क्षेत्रों में 150–200 क्विंटल और असिंचित क्षेत्रों में 60–90 क्विंटल कच्ची हल्दी प्राप्त होती है। कच्ची हल्दी सुखाने पर 15 से 25 प्रतिशत रह जाती है।

पौध संरक्षण

कीट नियंत्रण– हल्दी की फसल को कीटों से अधिक हानि तो नहीं पहुंचती लेकिन कुछ कीट इसकी फसल को हानि पहुंचाते हैं जो निम्न हैं–

तना बेधक– यह कीट पौधे के नए बढ़ते हुए भागों पर लगता है और इसका रस चूस लेता है जिससे कि पौधा सूख जाता है।

रोकथाम– जिन शाखाओं पर इसका प्रकोप हो गया उनको नष्ट कर दें और नीम का काढ़ा या गौमूत्र का माइक्रोझाइम के साथ मिलाकर छिड़काव करें।

थ्रिप्स – यह भी पत्तियों का रस चूसता है जिससे पौधे सूख जाते हैं।

रोकथाम– रोकथाम के लिये गौ मूत्र या नीम का काढ़ा या दोनों माइक्रोझाइम के साथ मिलाकर छिड़काव करें।

रोग–नियंत्रण

पर्ण चित्ती – यह रोग टैफरीना मैक्युलैस नामक फफूंद के कारण होता है इस रोग में पत्तियों के ऊपरी सिरे लाल–भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं जो कि पूरे पत्ती पर फैल जाते हैं फलतः पत्ते सूख जाते हैं।

रोकथाम– नीम का काढ़ा या गौमूत्र का छिड़काव माइक्रोझाइम के साथ मिलाकर करें।

कैनाइन डिस्टेम्पर वायरस से कुत्तों में संक्रामक बीमारी

● डॉ. स. दि. औदार्य (सहा. प्राध्यापक)
● डॉ. नी. श्रीवास्तव (सह. प्राध्यापक)
● डॉ. अं. कि. निरंजन (सहा. प्राध्यापक),
पशुचिकित्सा सूक्ष्मजीव–विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, कुठुलिया, रीवा

महामारी विज्ञान

श्वानीय पीड़ा विषाणु की विस्तृत मेजबान श्रेणी में कैनिडी, ऐलुरीडी, हयेनिडी, मुस्तलिडी, प्रोसीओनिडी, उर्सिडी, विवरिडी और फेलिडी परिवार के सदस्य शामिल है। कई वन्यजीवों में रोग के प्रकोप का दस्तावेजीकरण किया गया है (लोमड़ियों, झालरों, रैकूनों, काले पैरों वाली फेरेट्स प्रजातियों सहित सिंह में)। श्वानीय पीड़ा विषाणु अपेक्षाकृत अस्थिर है। संचरण के लिए सीधे संपर्क या वायु विलयन (एयरोसौल्ज़) की आवश्यकता होती है। शहरी कुत्तों की आबादी में, अतिसंवेदनशील कुत्तों में संक्रमण से विषाणु बना रहता है। संक्रमण युवा कुत्तों में तेजी से फैलता है, आमतौर पर 3 से 6 महीने की उम्र के बीच, जब मातृ–व्युत्पन्न प्रतिरक्षा कम हो जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुत्तों की आबादी की कम संख्या के परिणाम स्वरूप निरंतर संक्रमण बनाये रखना मुश्किल है, उम्र की परवाह किए बिना, बिना टीकाकरण वाले कुत्ते श्वानीय पीड़ा विषाणु रोग के प्रति अतिसंवेदनशील होते हैं और रोग का बड़ा प्रकोप यहाँ हो सकता है।

रोगजनन

श्वानीय पीड़ा विषाणु ऊपरी श्वसन पथ में संख्या वृद्धि करता है और गलतुण्डिका (टॉन्सिल) और श्वसनी लसीका पर्व (ब्रोन्कियल लिम्फ नोड्स) में फैलता है। कोशिका–संबद्ध विषाणु के रक्त संचरण (विरेमिया) से विषाणु दूसरे लसिका सम्बन्धी (लिम्फोरेटिकुलर) ऊतकों में फैलता है। विषाणु की संख्या वृद्धि लसीका–कोशिका अपघटन/लसीका–कोशिकालयन (लिम्फोसाइटोलिसिस) और श्वेताणुन्यूनता (ल्यूकोपेनिया) पैदा करती है, जिसके परिणामस्वरूप होने वाली प्रतिरक्षा–रोक (इम्यूनोसप्रेशन), अमुख्य/द्वितीयक (सेकेंडरी) विषाणु के रक्त संचरण (विरेमिया) विकसित करने के लिए सुविधा देता है। विषाणु के, रोग ग्रसित जानवरों की ऊतकों और अंगों में फैलने की सीमा का, रोगग्रसित जानवरों में रोग प्रतिरोधक क्षमता की गति और प्रभावशीलता द्वारा निर्धारित किया जाता है। पर्याप्त जोरदार प्रतिक्रिया के अभाव में श्वानीय पीड़ा विषाणु का प्रसार और प्रतिकृति, श्वसन, जठरांत्र, मूत्र और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में होता है। त्वचा में भी श्वानीय पीड़ा विषाणु का फैलाव हो सकता है। विषाणु, केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के भीतर तंत्रिकोशिका या तंत्रिका कोशिका (न्यूरॉन्स) और ग्लियाल कोशिकाओं, दोनों को संक्रमित करता है और वहां बहुत लंबे समय तक बना रह सकता है। बूढ़ा कुत्ता मस्तिष्कशोथ/ मस्तिष्क की सूजन (एन्सेफलाइटिस) लंबे समय, मस्तिष्क में विषाणु के स्थायित्व से जुड़ा हुआ है। यह संभवतः कोशिका से कोशिका तक विषाणु का कोशिका–अपघटनी/गैर–कोशिकालयन से फैलना और प्रतिरक्षा प्रणाली से बचे रहना इसके कारण हुआ हो सकता है। दोषपूर्ण खसरा विषाणु (डिफेक्टिव मीसल्स वायरस) के लगातार संक्रमण में बच्चों का अनुतीव्र काठिन्यकर मस्तिष्कशोथ/मस्तिष्क की सूजन (सबअक्यूट स्क्लेरोज़िंग पैनेंसेफलाइटिस) यह भी इसी प्रकार से होता है। इन स्थितियों में विषाणु के प्रतिजन की लंबे समय तक की उपस्थिति, निम्न–श्रेणी के सूजन और जलन प्रतिक्रिया के विकसन को उत्तेजित करती है।

कुत्तों और अन्य मांसाहारी जानवरों की यह अत्यधिक संक्रामक बीमारी है। इसका वितरण विश्वव्यापी है और यह बीमारी भारत में भी पायी जाती है। श्वानीय पीड़ा विषाणु (कैनाइन डिस्टेम्पर वायरस) एक मोरबिली विषाणु है। श्वानीय पीड़ा विषाणु रोग ग्रसित जानवरों में कई अंग प्रणालियों से जुड़े सामान्यीकृत संक्रमण पाए जाते हैं।

चिकित्सकीय संकेत

ऊष्मायन अवधि (इन्क्यूबेशन पीरियड) आमतौर पर लगभग 1 सप्ताह की होती है, लेकिन पूर्व संक्रमण के सबूत के बिना तंत्रिका संबंधी लक्षण दिखाई देने पर यह 4 सप्ताह या उससे अधिक समय तक हो सकती है। बीमारी की गंभीरता और अवधि परिवर्तनशील होती है, और यह संक्रामक विषाणु की उग्रता, संक्रमित जानवर की आयु और प्रतिरक्षी स्थिति और उसकी संक्रमण के विरुद्ध प्रतिक्रिया हेतु प्रतिरक्षा की गति, इनसे प्रभावित होती है। संक्रमण के लिए, ज्वर, द्विध्रुवीय प्रतिक्रिया है, हालांकि प्रारंभिक तापमान की ऊंचाई पर ध्यान नहीं जा सकता है। ज्वर की दूसरी अवधि के दौरान, आंख और नाक से बहाव (ओकुलोनसाल डिस्चार्ज), ग्रसनीशोथ और गलतुंडिका (टॉन्सिलर) वृद्धि स्पष्ट हो जाती है। खाँसी, उल्टी और दस्त अक्सर अमुख्य/ द्वितीयक (सेकेंडरी) संक्रमण के परिणाम होते हैं। पेट की त्वचा पर लाल चकत्ते और फुंसी हो सकते हैं। कुछ प्रभावित कुत्तों में अतिकिरेटिनता (हाइपरकेराटोसिस) जो नाक और पाँव के तलवों (फुटपैड) – जिसे सख्त तलवे (हार्डपैड) कहा जाता है– को होती है। तीव्र रोग, जो कुछ हफ्तों तक रह सकता है, उसके बाद या तो ठीक हो जाता है या जीवन भर की प्रतिरक्षा दे जाता है अथवा तंत्रिका संबंधी संकेतों के विकास द्वारा अंत में, बाधित जानवर मृत्यु को प्राप्त होते है। सामान्य तंत्रिकीय (न्यूरोलॉजिकल) संकेतों में केवल पेशियों का पक्षाघात (पैरेसिस), असामान्य तंत्रिकीय गतिविधि जिसकी तेजी व बारी–बारी से मांसपेशी का संकुचन और विश्राम यह विशेषता है (मायोक्लोनस) और दौरे शामिल हैं। ऐंठन 'चबाने' के रूप में शुरू हो सकती है वहीं जानवर लार करता है और जबड़े के साथ बार–बार चबाता है। उसके बाद शरीर की अकड़ बढ़ती जाती है जिसके परिणामस्वरूप मिरगी के दौरे (इस दौरान घूरना, गिरना, हिलना आसपास हो रहे चीजों की जागरूकता को खो देना) आते हैं। तंत्रिका संबंधी गड़बड़ी प्रदर्शित करना यह जानवरों में एक गंभीर रोग का संकेत है। जीवित रहने वाले कुत्तों में अवशिष्ट तंत्रिकीय कमी आम है। बूढ़ा कुत्ता मस्तिष्कशोथ/मस्तिष्क की सूजन (एन्सेफलाइटिस) शरीर संचालक गतिविधि और व्यवहार का बिगड़ना हमेशा घातक होता है। संदर्भः वेटरनरी माइक्रोबायोलॉजी एंड माइक्रोबियल डिजीज – पि. जे. क्वींन और अन्य, विले ब्लैकवेल प्रकाशन।

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

भारत सरकार द्वारा शक्कर कारखानों में एथेनॉल उत्पादन की अनुमति देने व एथेनॉल की खरीदी ऑयल कम्पनीज द्वारा करना सुनिश्चित होने से शक्कर कारखानों में हानि की संभावनाएं समाप्त हो गई हैं। अभी तक गन्ने से केवल गुड़ या शक्कर बनाने का ही विकल्प था। गुड़, शक्कर की खपत की सीमा है, खपत से अधिक पैदावार होने पर भाव गिर जाते थे। गिरे हुए भावों पर गन्ना मूल्य की भी भरपाई नहीं होती है। अतः किसानों का गन्ना मूल्य शेष रहने की खबरें हमेशा रहती हैं। परन्तु अब गन्ने से एथेनॉल बनने के कारण उपरोक्त सभी समस्याएं समाप्त हो गई हैं। अभी भारत सरकार ने पेट्रोल में दस प्रतिशत एथेनॉल ब्लेंडिंग की अनुमति दी है जिसमें से 8 प्रतिशत ही हो पा रही है दो प्रतिशत अभी भी कम है। ब्राजील में 27 प्रतिशत ब्लेंडिंग की अनुमति है वहीं 50 प्रतिशत से अधिक गन्ने का उपयोग एथेनॉल बनाने में किया जाता है। वर्तमान में शक्कर कारखानों में न केवल शक्कर बनती है बल्कि एथेनॉल, पावर, बायो फर्टिलाइजर, सीबीजी/बायोगैस भी बनती है। पशु आहार व कार्ड बोर्ड बनाने के लिए भी इनके बाई प्रोडक्ट काम आते हैं।

एमपी बन सकता है 'टॉप' गन्ना 'स्टेट'

● एम.डी. पराशर
(पूर्व सीजीएम शुगर फैक्ट्री व संचालक मध्यांचल किसान उद्योग लि.)

उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में वर्षों से बंद कारखानों में उत्पादन प्रारंभ कराया जा रहा है। महाराष्ट्र में लगभग 20 कारखानों को जो वर्षों से बंद थे, लीज पर देकर उत्पादन कराया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में भी, न केवल सभी बंद कारखानों में उत्पादन को प्रारंभ कराने का प्रयास किया जा रहा है बल्कि 8 नये कारखाने लगाने का निर्णय राज्य शासन द्वारा लिया गया है। म.प्र. के मुरैना, गुना व अन्य रुग्ण कारखानों को भी महाराष्ट्र की भांति लीज पर देने का निर्णय लिया जाना चाहिए।

मध्य प्रदेश में गन्ना आधारित उद्योगों के विकास के लिए परिस्थितियां अनुकूल है। गन्ना सिंचाई आधारित फसल है। म.प्र. का कुल सिंचित क्षेत्रफल उ.प्र. के बाद दूसरे क्रम में है। मध्य प्रदेश में महाराष्ट्र से लगभग दो गुना से भी अधिक सिंचित कृषि भूमि है। अतः मध्य प्रदेश भविष्य में शक्कर उद्योग का पहले या दूसरे क्रम का राज्य हो सकता है। मध्य प्रदेश में गन्ना फसल महाराष्ट्र के गन्ना क्षेत्रफल की तुलना में 10 प्रतिशत से भी कम है तथा शक्कर उत्पादन 6 प्रतिशत से भी कम है। यहां केवल 18 कारखाने हैं व महाराष्ट्र में 195 कारखाने हैं और इनकी संख्या 210 से भी अधिक होगी। यहां कारखाने 18 हैं परन्तु उत्पादन में यह गुजरात, हरियाणा, बिहार से बहुत पीछे है, जहां कारखाने संख्या में कम हैं। सिंचाई सुविधा व भूमि अनुकूलता को देखते हुए शासकीय पहल की आवश्यकता है।

मध्य प्रदेश की भूमि भी गन्ना फसल के लिये अनुकूल है। प्रदेश के अधिकांश जिलों में कुछ न कुछ गन्ना फसल होती भी हैं। गन्ने से आय अन्य फसलों सोयाबीन, गेहूं, सरसों आदि की तुलना में लगभग दोगुनी है। गन्ना फसल में प्राकृतिक प्रकोप को सहन करने की

शक्ति भी अन्य फसलों से बहुत अधिक है। गन्ने की बुआई एक बार करने पर तीन वर्ष तक उपज ली जा सकती है। अद्यतन तकनीक व उन्नत बीजों का प्रयोग कर 100 टन प्रति हेक्टेयर से कहीं अधिक औसत उत्पादन लिया जा सकता है। एक हेक्टेयर में लगभग 3.50 लाख रुपये का गन्ना पैदा होता है और लगभग 50000 से एक लाख रुपए तक सह फसली से आय हो सकती है। जबकि लागत 1.00 लाख रुपये से भी कम है। अतः यह कृषकों के लिए अत्यधिक हितकर फसल है। अनुकूल क्षेत्रफल की पहचान करके उत्तम किस्म के बीज उपलब्ध कराया जाये व अद्यतन तकनीक का कृषकों को प्रशिक्षण कराया जाये तो म.प्र. में महाराष्ट्र के समान ही गन्ना उत्पादन हो सकता है। यहां भी अनेकों कारखाने खुल सकते हैं। अगर यह सम्भव हुआ तो यह किसानों, बेरोजगारों व शासन के राजस्व के हित में बड़ी क्रांति होगी।

एक शक्कर कारखाने से प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से 2000 व्यक्तियों को रोजगार मिलता है व नये कारखाने की लागत 100-150 करोड़ है। संस्थागत वित्तीय सहायता या ऋण के अलावा प्रमोटर को 30 से 40 करोड़ ही निवेश करने होते हैं। 2000 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराने वाले अन्य कारखानों की लागत हजारों करोड़ होती है। अतः निवेशक भी सहज उपलब्ध नहीं होते हैं, परन्तु 30-40 करोड़ का निवेश करने वाले निवेशक तो प्रदेश में ही उपलब्ध हैं, अतः शक्कर कारखानों के लिए अन्य कारखानों की तुलना में निवेशक मिलना सरल है।

प्रदेश में शक्कर उद्योग के विकास के साथ ही शुगर मिल मशीनरी एवं सम्बंधित रसायन, वारदाना, परिवहन उद्योग से भी रोजगार व समृद्धि बढ़ेगी। गन्ना अनुसंधान केन्द्रों की भी आवश्यकता होगी जिससे संस्थान की स्थापना और रोजगार बढ़ेगा। महाराष्ट्र की भांति शक्कर उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों के लिये शिक्षा, चिकित्सा केन्द्र भी विकसित करने में सरकार की मदद करेगी। शक्कर उद्योग के गोदाम व खाली भूमि सोलर संयंत्र लगाकर सोलर एनर्जी के व्यवसाय में भी सहायक हो सकते हैं। शक्कर उद्योग के परिसर में अन्य कृषि उत्पादों के प्रसंस्करणों की इकाइयां भी लगाई जा सकती हैं। शक्कर कारखानों को कृषि उत्पादनों के प्रसंस्करण उद्योग के लिये औद्योगिक पार्क के रूप में भी विकसित किया जा सकता है। महाराष्ट्र के कारखानों से शासन को लगभग 4000 करोड़ राजस्व प्राप्त होता है, इसलिए प्रदेश के राजस्व का भी यह उद्योग महत्वपूर्ण स्त्रोत होगा। गन्ना विकास और चीनी उद्योग हेतु एक उच्चस्तरीय समिति गठित करना उचित होगा। उद्योग, सिंचाई, कृषि विभागों के प्रतिनिधित्व के सलाह से प्रदेश का गन्ना क्षेत्र में औद्योगीकरण की बड़ी सम्भावना का लाभ उठाया जा सकता है।

म.प्र. : गन्ना परिदृश्य

क्र.	राज्य	कुल सिंचाई क्षेत्र (हजार हे. में)		गन्ना का क्षेत्र (हेक्टेयर में)		उत्पादन मी.टन/हे.		कुल शक्कर कारखाने की संख्या	
		2018-19	2019-20	2020-21		2020-21		2018-19	
1.	आंध्र प्रदेश	3635	3813	55	10वां	78.08	7वां	18	5वां
2.	बिहार	5493	5435	219	चौथा	68.43	9वां	11	8वां
3.	गुजरात	-	-	183	5वां	74.53	8वां	16	6वां
4.	हरियाणा	6024	-	93	9वां	81.19	6वां	14	7वां
5.	कर्नाटक	4744	-	428	तीसरा	96.0	दूसरा	67	तीसरा
6.	मध्य प्रदेश	12684	14704	106	7वां	53.45	10वां	18	5वां
7.	महाराष्ट्र	4692 (2017-18)	-	1142	दूसरा	85.00	तीसरा	195	पहला
8.	पंजाब	7735	-	95	8वां	82.60	चौथा	16	6वां
9.	तमिलनाडु	3183	3410	139	6वां	100.00	पहला	35	चौथा
10.	उत्तर प्रदेश	21681	-	2180	पहला	81.31	5वां	119	दूसरा

केवीके कृषि जगत की रीढ़ : श्री तोमर

कृषि विज्ञान केंद्र के प्रशासनिक भवन का उद्घाटन किया केंद्रीय कृषि मंत्री ने

नई दिल्ली। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत केंद्रीय तम्बाकू अनुसंधान संस्थान से सम्बद्ध कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), कन्दुकुर (जिला प्रकाशम, आंध्र प्रदेश) के प्रशासनिक भवन का उद्घाटन केंद्रीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने किया। वर्ष 2012 में स्थापित यह केवीके देश के 731 केवीके में से एक है, जिसके कार्यात्मक अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत प्रकाशम व नल्लौर जिले के 28 मंडल आते हैं। इस अवसर पर श्री तोमर ने कहा कि सभी केवीके कृषि जगत की रीढ़ के समान है, जिन पर किसानों को बहुत भरोसा है। इसे कायम रखते हुए केवीके वक्त की जरूरत समझकर अपनी गति बढ़ाएं और कृषि क्षेत्र के साथ ही देश आजादी के अमृत महोत्सव के इस शुभ अवसर पर न्यू इंडिया के निर्माण में अपना योगदान दें।

श्री तोमर ने कार्यक्रम में कहा कि कृषि उत्पादन की दृष्टि से भारत आज बहुत अच्छी स्थिति में है, जिसमें किसानों व सरकार की किसान हितैषी नीतियों के साथ ही कृषि वैज्ञानिकों का प्रमुख योगदान है। केवीके को कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के विज्ञान आधारित परिवर्तन में और ज्यादा सक्रिय व उत्प्रेरक भूमिका निभाने की आवश्यकता है। किसान की आय बढ़े, वे उन्नत फसल उगाएं, अच्छी तकनीक का इस्तेमाल करें, सॉयल हेल्थ कार्ड का उपयोग कर अपने खेत की मिट्टी के स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त करें, कम से कम रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें और प्राकृतिक खेती को अपनाएं, इस दृष्टि से केवीके की भूमिका अपने जिले के किसानों की उन्नति और तरक्की के लिए अहम है।

कार्यक्रम को डेयर के सचिव एवं आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने भी संबोधित किया।

15 जून से मध्य और उत्तर भारत में मानसून सक्रिय होने की संभावना

नई दिल्ली। तेज गर्मी से बेहाल राज्यों को हफ्तेभर बाद राहत मिल सकती है। मौसम विभाग (आइएमडी) के मुताबिक 15 जून से मानसून मध्य और उत्तर भारत में सक्रिय हो सकता है। आइएमडी के महानिदेशक श्री मृत्युंजय महापात्र ने बताया कि 15 जून तक बारिश की गतिविधियां बढ़ने की संभावना है। इससे चावल, मक्का, कपास, सोयाबीन, गन्ना और मूंगफली जैसी फसलों की बुवाई में मदद मिलेगी। देश में करीब 70 प्रतिशत बारिश मानसून में होती है। इसे खेती के लिए अहम माना जाता है। इस साल मानसून दो दिन पहले 29 मई को केरल पहुंचा था। हालांकि अब तक बारिश औसत से 42 प्रतिशत कम रही है। वर्तमान मानसून कर्नाटक में सक्रिय है।

मध्य प्रदेश में प्री-मानसून का दौर

वहीं म.प्र. में झुलसाती गर्मी के बीच किसानों एवं नागरिकों को मानसूनी वर्षा का इंतजार है। हालांकि प्री-मानसून की वर्षा राज्य के कुछ जिलों में हो रही है। परन्तु गर्मी से राहत नहीं मिल रही। मौसम विभाग के मुताबिक 15 जून के बाद मध्य प्रदेश में मानसून सक्रिय होने का अनुमान है। गत वर्ष प्रदेश में मानसून 10 जून को आया था।

मध्य प्रदेश में मानसून कब आया

वर्ष	तिथि
2016	19 जून
2017	22 जून
2018	24 जून
2019	24 जून
2020	15 जून
2021	10 जून

इस वर्ष 22 लाख 47 हजार हेक्टेयर में बोयी जाएंगी खरीफ फसलें

कृषि उत्पादन आयुक्त द्वारा इंदौर संभाग की समीक्षा बैठक

इंदौर। इंदौर संभाग में इस वर्ष खरीफ में 22 लाख 47 हजार से अधिक हेक्टेयर में फसलें बोयी जाएंगी। संभाग में मुख्य रूप से सोयाबीन, कपास, मक्का आदि की बोनी होगी। संभाग में इस वर्ष प्राकृतिक खेती पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। किसानों को प्रोत्साहित किया जायेगा, कि वे प्राकृतिक खेती को अपनाएं। संभाग में कम लागत में अधिक कृषि उत्पादन प्राप्त करने के लिये सूक्ष्म कार्ययोजना तैयार की गई है। इस कार्ययोजना की संभाग स्तरीय समीक्षा के लिये कृषि उत्पादन आयुक्त श्री शै

लेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में संभागायुक्त डॉ. पवन कुमार शर्मा, इंदौर जिला कलेक्टर श्री मनीष सिंह सहित संभाग के सभी जिलों के कलेक्टर्स, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी और संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

मांग अनुसार समय पर खाद, बीज उपलब्ध कराने की व्यवस्था- वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से यह बैठक विभिन्न सत्रों में आयोजित की गई। बैठक में कृषि सहित इससे जुड़े हुए सहकारिता, पशुपालन, उद्यानिकी,मत्स्य पालन, डेयरी आदि विभागों की विभागीय गतिविधियों की समीक्षा की गई। बैठक में श्री शेलेन्द्र सिंह ने बताया कि इंदौर संभाग में किसानों को समय पर उनकी मांग अनुसार खाद, बीज सहित अन्य कृषि आदान उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि गत वर्ष के माहवार वितरण की जानकारी एकत्र कर उसके अनुसार खाद, बीज का भंडारण सुनिश्चित कर लें।

प्राकृतिक खेती के लिये 11 हजार किसानों ने कराया पंजीयन- बैठक में संभागायुक्त डॉ. पवन कुमार शर्मा ने बताया कि सभी जिलों में एक हजार 223 अधिकारी-कर्मचारियों को प्राकृतिक खेती के बारे में प्रशिक्षित किया जा चुका है। संभाग में अभी तक लगभग 11 हजार किसानों ने प्राकृतिक खेती के लिये अपना पंजीयन भी करा लिया है। श्री शैलेन्द्र सिंह ने निर्देश दिए कि प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों की जानकारी राजस्व अभिलेख में दर्ज की जाए । बैठक में सहकारिता, उद्यानिकी, पशुपालन आदि विभागों की समीक्षा कर कृषि उत्पादन आयुक्त ने जानकारी ली एवं आवश्यक निर्देश दिये।

अब कृषक जगत वेबसाइट पर भी उपलब्ध
www.krishakjagat.org

बिना लागत वाली

सुबबूल की खेती में किसानों का भविष्य सुरक्षित

इंदौर। किसान कोई भी खेती करे उसमें लागत तो आती ही है, साथ ही प्राकृतिक प्रकोप और अन्य कारणों से यदि फसल प्रभावित होती है तो नुकसान के कारण किसानों का भविष्य भी सुरक्षित नहीं रहता है, लेकिन यदि सुबबूल की खेती की जाए तो इसमें न तो प्राकृतिक प्रकोप का डर रहता है न ही कोई अन्य लागत आती है। पौधे लगाने के 18 माह बाद फसल की निश्चितता से किसानों का भविष्य सुरक्षित भी रहता है। यह कहना है सुबबूल की खेती करने वाले ग्राम पिपल्या जिला धार के किसान श्री गोविन्द पाटीदार का।

श्री पाटीदार ने कृषक जगत को बताया कि बड़गांवखेड़ी के एक मित्र किसान की प्रेरणा से तीन साल पहले 2019 में 12 एकड़ में सुबबूल के बीज 2× 6 फ़ीट की दूरी पर लगाए थे, जो अब पेड़ बनकर निश्चित आय का जरिया बन गए हैं। सुबबूल के पेड़ों की कटिंग नीचे से की जाती है, ताकि बाद में और शाखाएं निकलती रहें। अब तक इनकी 4-5 बार कटिंग कर 460 टन लकड़ी बेची जा चुकी है। जिसे कम्पनी जेके पेपर मिल द्वारा 3600 रुपए प्रति टन की दर से खरीदा जाता है। यहाँ तक कि लकड़ी की कटाई और परिवहन का खर्च भी कम्पनी द्वारा उठाया जाता है। सुबबूल की खेती में खाद-दवाई आदि की जरूरत नहीं होती है, इसलिए कोई अन्य लागत नहीं लगती है। ढाई रुपए प्रति पौधे की दर से किसान को कम्पनी से पौधे खरीदने का खर्च लगता है। इस खेती में प्राकृतिक प्रकोप का भी कोई खतरा नहीं रहता है। आंधी -तूफ़ान में भी यह फसल सुरक्षित रहती है। सुबबूल नाम जरूर है, लेकिन इसमें कांटे नहीं होते हैं।

श्री गोविन्द ने बताया कि अब तो सुबबूल की नई किस्म सीटीएम-32 नामक क्लोन वेरायटी आ गई है। इसके टिश्यू कल्चर लगाए जाते हैं, जो 18 माह में ही उत्पादन देना शुरू कर देती है। इसमें पौधे से पौधे की दूरी 3 फीट और कतार से कतार की दूरी 6 फीट रहती है। दो कतारों के बीच की जगह में अन्य अंतरवर्तीय फसल भी ली जा सकती है। एक एकड़ में 2400 पौधे लगते हैं। जिससे 40 टन उत्पादन मिलता है। पेड़ों की ऊंचाई 25 फीट तक रहती है। जब पेड़ों की ऊंचाई 12-14 फीट हो जाती है, तो इनमें फलियां लगने लगती है, जिसके बीज निकाल लें, इन्हें कम्पनी द्वारा 200 रुपए किलो की दर से खरीदा जाता है। यह अतिरिक्त लाभ है, जिसे आम के आम और गुठलियों के दाम कहा जा सकता है। इन्होंने गांव के ही एक किसान की कोरोना से मृत्यु होने पर उनकी विधवा पत्नी को सुबबूल की खेती के लिए प्रेरित किया और 11 बीघे में सुबबूल लगवाया, ताकि बिना किसी परेशानी के निश्चित आय हो सके। इनका सभी किसानों से कहना है कि यदि किसानों को सुखी और समृद्ध बनना है तो उन्हें सुबबूल की खेती करना चाहिए। **अधिक जानकारी के लिए श्री विपिन चौहान से मो.: 9009485410 पर सम्पर्क करें।**

मध्यप्रदेश शासन की प्रमुख योजनाएं

फल पौधा रोपण योजना

विभाग	उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग
योजना	फल पौधा रोपण योजना
अधिकार क्षेत्र	राज्य प्रवर्तित योजना
योजना कब से प्रारंभ की गई	1900-01-01
योजना का उद्देश्य	जिले के फल पौध क्षेत्र में विस्तार एवं फल उत्पादन में वृद्धि करना है। यह योजना प्रदेश के सभी 51 जिलों में क्रियान्वित है।
लाभार्थी के लिए आवश्यक शर्तें/लाभार्थी चयन प्रक्रिया	1. योजना का क्रियान्वयन कृषक की निजी भूमि में किया जावेगा। 2. हितग्राही के पास सिंचाई के पर्याप्त साधन उपलब्ध हो। 3. हितग्राही कृषक की रुचि व इच्छा रोपण में तथा रोपित किये जाने वाले फलों में हो।
लाभार्थी वर्ग	सभी के लिए
लाभार्थी का प्रकार	किसान
लाभ की श्रेणी	अनुदान
योजना का क्षेत्र	ग्रामीण
आवेदन कहाँ करें	पदभिहित अधिकारी जिला कार्यालय उद्यानिकी विभाग
आवेदन प्रक्रिया	सभी कृषक पात्र हैं।
अनुदान/ऋण/वित्तीय सहायता/पेंशन/लाभ की राशि	हितग्राही को कम से कम 1/4 हेक्टेयर और अधिकतम 4 हेक्टेयर तक (एक फल) के रोपण पर अनुदान की पात्रता होगी। फलदार फसलों पर स्वयं के साधन से रोपण करने पर एवं बैंक ऋण पर भी प्रावधान अनुसार अनुदान देय होगा। योजना के तहत नाबार्ड/विभाग द्वारा प्रति हे. निर्धारित लागत मूल्य का 25 प्रतिशत अनुदान देय होगा।
हितग्राहियों को भुगतान की प्रक्रिया, ऋण एवं अनुदान की व्यवस्था/वित्तीय प्रावधान	कृषकों को इकाई लागत का 40 प्रतिशत अनुदान 60:20:20 के अनुपात में तीन वर्षों में देय है।

सिवनी जिले की खबरें

प्रकाश दुबे

श्री सनोडिया सेवानिवृत्त

सिवनी जिला ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी संघ के अध्यक्ष श्री बीजी सनोडिया गत दिवस कृषि विभाग में अपनी लम्बी सेवा देने के पश्चात सेवानिवृत्त हो गए। उनके सम्मान में कृषि विभाग द्वारा विदाई समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर उप संचालक कृषि श्री मोरीस नाथ ने श्री सनोडिया का सम्मान कर उनके कार्यकाल में किए गए प्रयासों की सराहना की एवं उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी कृषि श्री प्रफुल्ल घोड़ेसवार, सहायक संचालक कृषि श्री राजेश मेश्राम, श्री पवन कौरव सहित विभाग के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

बीज उत्पादक समितियों की समीक्षा

खरीफ सीजन में जिले में बीजों का उत्पादन कर बीज उपलब्ध कराने में कार्यरत 12 बीज उत्पादक समितियों की समीक्षा उपसंचालक कृषि श्री मोरीस नाथ ने की। इस दौरान समितियों द्वारा धान का बीज एमटीयू 1010 एवं जेआर 81, 206 का 4100 किंवटल बीज उपलब्ध होने की समितियों ने जानकारी दी। उप संचालक कृषि ने सभी समिति प्रबंधकों से गुणवत्ता युक्त बीज समय पर उपलब्ध करवाने की बात कही।

यूरिया गोदाम सील

खरीफ सीजन में गुणवत्ता युक्त कृषि आदान सामग्री कृषकों को प्राप्त हो। इसके लिए कलेक्टर के निर्देश अनुसार उप संचालक कृषि श्री मॉरिस नाथ के मार्गदर्शन में अनुविभागीय अधिकारी कृषि श्री प्रफुल्ल घोड़ेसवार एवं सहायक संचालक कृषि श्री पवन कौरव ने खाद बीज विक्रेताओं की संस्था एवं गोदामों का निरीक्षण किया।

इस दौरान 21 क्विंटल धान बीज केशव खनक कंपनी का बिना अनुमति पत्र लिए विक्रय किए जाने पर प्रतिबंधित किया। यशस्वी कृषि सेवा केंद्र पर धान बीज एवं उर्वरक के उचित प्रमाण पत्र ना होने पर विक्रय प्रतिबंधित किया। सबसे बड़ी कार्यवाही एग्री कृषि सेवा केंद्र सिवनी के गोदाम में 153 मेट्रिक टन यूरिया भंडारण के आवश्यक दस्तावेज ना होने के कारण गोदाम सील किया।

सम्मान निधि का लाइव कार्यक्रम

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के किसान सम्मान निधि का मुख्य कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश में आयोजित किया गया, जिसका लाईव प्रसारण कृषि विज्ञान केंद्र सिवनी में किया गया। इस अवसर पर जिले के कृषक एवं कृषि वैज्ञानिक डॉ. केके देशमुख, डॉ. केपीएस सैनी कृषि विभाग के अनुविभागीय अधिकारी श्री प्रफुल्ल घोड़ेसवार,सहायक संचालकदृय श्री जीएस बावने, श्री राजेश मेश्राम, श्री पवन कौरव, श्री नितिन गनवीर, एनएफएसएम के डॉ. अखिलेश कुल्हाडे, श्री ऋषिकेश चन्द्रपुरी सहित विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

श्री कौशिक डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित

इंदौर। ग्राम अजड़ावदा, तहसील बड़नगर, जिला उज्जैन के प्रगतिशील किसान श्री योगेंद्र कौशिक को कृषि क्षेत्र में उनके द्वारा दिए गए योगदान को देखते हुए कृषि विश्वविद्यालय धारवाड़ (कर्नाटका) द्वारा गत दिनों डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। श्री कौशिक को यह सम्मान कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावरचंद गहलोत द्वारा दिया गया। इस मौके पर कृषि मंत्री कर्नाटक सरकार श्री बी.सी. पाटिल और कुलपति श्री महादेव बी चेट्टी सहित अन्य गणमान्य उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि श्री कौशिक को इसके पूर्व विकासखंड स्तरीय और राज्य स्तरीय सर्वोत्तम कृषक पुरस्कार, राष्ट्रपति द्वारा कृषि कर्मण अवॉर्ड के अलावा फेलो फार्मर और इनोवेटिव फार्मर अवॉर्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

कपास किस्म कर्ण-2 से 8 क्विंटल उत्पादन मिला

इंदौर। श्री जगदीश पिता जसवंत गोलकर निवासी छैगांवमाखन तहसील पंधाना जिला खंडवा ने बताया कि वे लगातार 4 वर्षों से नाथ बायो जीन इंडिया लि. की कपास की संकर किस्म कर्ण-2 लगा रहे हैं। गत वर्ष भी कर्ण-2 का एक पैकेट लगाया था, जिसमें अन्य की तुलना में बीमारियां कम रही। घेटे अच्छे खुलने से चुनाई में भी आसानी रही और उत्पादन 8 क्विंटल मिला। इस खरीफ में कर्ण-2 और जम्बो का एक-एक पैकेट लगाएंगे। मेरी किसानों को सलाह है कि आप भी कर्ण-2 कपास लगाएं और अच्छा उत्पादन पाएं। मो.: 9617203045

'खरीफ फसलों में पोषक तत्वों का प्रबंधन' पर वेबिनार सम्पन्न

एनपीके के साथ अन्य पोषक तत्व भी किसानों तक पहुंचे

इंदौर। गत दिनों कृषक जगत किसान सत्र में प्रसिद्ध कम्पनी कर्नाटका एग्रो केमिकल्स (मल्टीप्लेक्स) द्वारा 'खरीफ फसलों में पोषक तत्वों का प्रबंधन' विषय पर ऑनलाइन वेबिनार आयोजित किया गया। मल्टीप्लेक्स की ओर से जोनल मैनेजर श्री नागेंद्र शुक्ला और रिसर्च हेड डॉ. निरंजन एच. जी. शामिल हुए। दोनों ने पोषक तत्वों के प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में किसान शामिल हुए। कृषक जगत प्रश्नोत्तरी और कृषि ज्ञान प्रतियोगिता में किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। वेबिनार का संचालन कृषक जगत के संचालक श्री सचिन बोन्द्रिया ने किया।

श्री नागेंद्र शुक्ला ने कम्पनी के परिचय में बताया कि मल्टीप्लेक्स की स्थापना 1974 में डॉ. जीपी शेट्टी ने इस उद्देश्य से की थी कि एनपीके के साथ अन्य पोषक तत्व भी किसानों तक पहुंचे। मल्टीप्लेक्स के उत्पाद 18 देशों में लोकप्रिय हैं। अपनी कई शाखाओं और 5 हजार वितरकों के माध्यम से उत्पादों की आपूर्ति करते हैं।

मिट्टी का महत्व

डॉ. निरंजन ने आरम्भ में मिट्टी के इतिहास,मिट्टी के गुण, वर्गीकरण और महत्व पर विस्तृत जानकारी दी। दोमट मिट्टी सबसे अच्छी रहती है, जिसमें पोषक तत्वों को पकड़ने, हवा और पानी के बहने की क्षमता होती है। उपजाऊ मिट्टी में जैविक पदार्थ और सूक्ष्म जीव भी होना चाहिए। इससे मिट्टी भुरभुरी हो जाती है। मिट्टी में 16 पोषक तत्वों का होना जरूरी है। आपने सूक्ष्म तत्वों के गुण धर्म और उनकी फसल में उपयोगिता दर्शाते हुए कहा कि मिट्टी का पीएच मान 6.5 से 7.5 के बीच रहना चाहिए। 6.5 से कम वाली मिट्टी अम्लीय होती है, जबकि 7.5 के ऊपर वाली मिट्टी क्षारीय होती है। 16 पोषक तत्व डालने से फसल को फायदा होता है। मिट्टी की जाँच रिपोर्ट के आधार पर जो जरूरी हो वही पोषक तत्व डालें।

श्री नागेंद्र शुक्ला

श्री शुक्ला

श्री शुक्ला ने कहा कि सोयाबीन उत्पादन में मप्र अव्वल है। अच्छी फसल के लिए जमीन का स्वस्थ होना आवश्यक है। गोबर खाद को सही समय पर बारिश होने के बाद डालिए और हल चलाइए। संतुलित पोषक तत्वों के साथ मिट्टी में मित्र जीवों का होना भी जरूरी है। इसके लिए जैविक खाद, वर्मी कम्पोस्ट, बॉयो ऑर्गेनिक खाद बना लीजिए अन्यथा मल्टीप्लेक्स का नाल पॉक उत्पाद भी कारगर है। बुवाई से पहले बीजोपचार अवश्य करें। इसके लिए राइजोबियम, निसर्गा या जीव रस का प्रयोग करें। इससे अंकुरण अच्छा होता है और फसल निरोगी रहती है। बुवाई के समय सीड ड्रिल का प्रयोग करें अर्थात् पहले खाद फिर मिट्टी और फिर ऊपर बीज रहे। इससे बीज सड़ता नहीं है।

उर्वरक प्रबंधन

उर्वरक प्रबंधन की चर्चा करते हुए श्री शुक्ला ने कहा कि बुवाई के समय डीएपी में नाइट्रोजन 12-13 किलो/एकड़, फास्फोरस 32 -35 किलो और पोटाश 15-20 किलो/एकड़ डालें। गोबर खाद के अभाव में मल्टीप्लेक्स का अन्नपूर्णा खाद 60-90 /एकड़ की दर से डालें। यह कोकोपिट,वर्मी कम्पोस्ट, नीम खली, अरंडी खली, करंजी खली और मित्र जीव का मिश्रण है। जहां पीएच ज़्यादा है, वहां कम्पनी उत्पाद समृद्धि 25-100 किलो/एकड़ डालें। सुपर फास्फेट 6-8 बेग/एकड़ डालें। एनपीके के साथ सूक्ष्म पोषक तत्व भी डालें, इनकी मात्रा कम लगती है। सृष्टि जिंक हाई 5-10 किलो/एकड़ का सोयाबीन में प्रयोग करें। बुवाई के बाद खरपतवार नियंत्रण सही समय पर करें। पीएच सही नहीं है तो पहले सूक्ष्म तत्व क्रांति तरल का पहला छिड़काव करें। 35-45 दिन की फसल पर एनपीके या प्रो किसान का एक साथ छिड़काव करने से अच्छा फैलाव, फुटान और फूल आते हैं। शाखाएं अच्छी निकलने से उत्पादन अच्छा होता है। जबकि 45-60 दिन की फसल में 0:52:34 (मल्टी पीके) और बोरान का प्रयोग करने से फूल अच्छे आते हैं और दाने का भराव अच्छा होता है, वहीं 60 से 90 दिन के बाद फसल में 0:0:50 पोटाश और सल्फर के प्रयोग से फसल की गुणवत्ता बढ़ेगी। खरपतवार से फसल पीली पड़ती है, तो मल्टीप्लेक्स के समरस का एक लीटर पानी में 3 मिली लीटर की दर से स्प्रे करें। पीलापन दूर होगा और फसल हरी भरी रहेगी। यह ध्यान रखें कि फास्फोरस ज्यादा डालना भी नुकसानदायक होता है। मिट्टी की जाँच कराएं और एनपीके के साथ जिंक, मैगनीज, सल्फर और बोरान भी आवश्यक है, इन्हें जरूर डालें। इससे दाने की गुणवत्ता अच्छी होगी, बेहतर उत्पादन के साथ अच्छा मूल्य भी मिलेगा।

निसर्गा और जीव रस का प्रयोग करें

धान की फसल पर रोशनी डालते हुए श्री शुक्ला ने कहा कि मप्र में धान की उन्नत फसल के लिए नर्सरी से लेकर ट्रांसप्लांटिंग, फ्लावरिंग और हार्वेस्टिंग तक पोषक तत्वों का प्रबंध करना पड़ता है। हाइब्रिड पैडी का 6-8 किलो /एकड़ बीज पर्याप्त है। हाइब्रिड बीज बीजोपचारित रहते हैं,उन्हें करने की जरूरत नहीं है। अन्य बीजों के बीजोपचार के लिए मैंकोजेब कार्बेन्डाजिम के साथ निसर्गा और जीव रस का प्रयोग करें। इससे सीड कोट नरम होगा और अंकुरण अच्छा होगा। नर्सरी में स्वस्थ पौधे तैयार करें, फिर बेड तैयार करें। बेसल डोज में वर्मी कम्पोस्ट, अन्नपूर्णा खाद डालें। अमोनियम सल्फेट, एनपीके, सृष्टि जिंक का छिड़काव करें। ट्रांसप्लांटिंग के 10-15 दिन बाद डीएपी 15 किलो, एमओपी 25 किलो और सॉइल कंडीशनर समृद्धि 50 किलो, माइकोराइजा त्रिशूल 25 किलो/एकड़ डालें। इससे खाद जड़ों में फैल जाता है। दूसरा डोज 25-40 दिनों में दें इसमें 30 किलो डीएपी, 25 किलो एमओपी, यूरिया 30 किलो, सूक्ष्म तत्व सृष्टि ज़िंक हाई 5-10 किलो/एकड़, जिंक परम 4 किलो/एकड़ डालना जरूरी है, क्योंकि इन दिनों पौधा गर्भावस्था की स्थिति में आ जाता है। जब फसल 60 दिन की हो तब अमोनियम सल्फेट 20 किलो/एकड़ की दर से डालें। वर्षा के अलावा टिलरिंग के समय सिंचाई की ज़्यादा ज़रूरत पड़ती है। ऐसे ही कल्ले फूटने के समय भी सिंचाई का समुचित प्रबंध करें। डॉ. निरंजन ने धान के विभिन्न कीटों ब्राउन और ग्रीन हॉपर्स, लीफ फोल्डर,आर्मी वर्म, शीथ ब्लाइट आदि से होने वाले नुकसान की चर्चा कर इसके नियंत्रण के लिए पहले स्प्रे में मैंकोजेब/मल्टी नीम और क्रांति का प्रयोग करने की सलाह दी, ताकि रस चूसक कीट नहीं आएं। जबकि दूसरा स्प्रे 25-30 दिन में कार्बेंडाइजिम मैंकोजेब का करें। इसके अलावा नीम और क्रांति का स्प्रे करने से धान के कीटों पर नियंत्रण हो जाता है।

प्रश्नोत्तरी एवं कृषि ज्ञान प्रतियोगिता

प्रश्नोत्तरी में वरिष्ठ वैज्ञानिक और सोयाबीन विशेषज्ञ डॉ. अमरनाथ शर्मा के अलावा सिरसा (हरियाणा) के श्री संदीप, नरसिंहपुर के श्री दीपक कौरव, दलौदा के श्री अनिल सुराना, श्री स्नेह कौरव, श्री दिनेश पाटीदार और छग से श्री बसंत स्वर्णकार के प्रश्नों के उत्तर दिए गए। वहीं कृषि ज्ञान प्रतियोगिता में पूछे गए सवालों का श्री रवि कृष्णा सिंह और श्री सुनील कुशवाह ने सही जवाब दिए। इन्हें मल्टीप्लेक्स उत्पाद अन्नपूर्णा का पैकेट इनाम स्वरूप दिया जाएगा।

डॉ. निरंजन एचजी

डॉ. निरंजन

टमाटर की फसल के बारे में डॉ. निरंजन ने कहा कि इसके लिए दोमट मिट्टी अच्छी रहती है, जिसका पीएच मान 6-7 हो। 20-25 डिग्री तापमान पर टमाटर बीज का अंकुरण अच्छा होता है। इस फसल में चुनौतियाँ बहुत हैं। तापमान के अनुसार लीफ कर्ल वायरस, एन्थ्रेक्नोज और नेमाटोड्स से फसल पर असर पड़ता है। जहां गत वर्ष टमाटर लगाए वहां अन्य फसल लें। बेसल डोज में गाय का गोबर 10 टन/एकड़ के अलावा अन्नपूर्णा 5 बेग, आर्गेनिक मैजिक और सेफ रुट 2-5 किलो/एकड़ डालने से नेमाटोड्स नियंत्रित रहता है। बेड पर पौधे से पौधे की दूरी 2 फीट और कतार से कतार की दूरी 4-5 फीट हो। खाद के बाद मल्चिंग शीट बिछाने से खरपतवार का नियंत्रण हो जाता है। रासायनिक खाद में एनपीके प्रत्येक 100-100 किलो, समृद्धि 50 किलो, भूमि संजीवनी 10 किलो और नवजीवन 10 किलो/एकड़ डालें। अंकुरण से पहले और फिर 7-8 दिन के बाद सिंचाई करें। आपने रस चूसक नेमाटोड्स से जड़ में गांठें बन जाती हैं और फसल में पीलापन आ जाता है। कीटों सफ़ेद मक्खी, माइट्स, लीफ लाइनर की जानकारी देते हुए कहा कि टोमेटो फ्रूट बोरर, टोस्पो वायरस से होता है जो थ्रिप्स से फैलता है। पाउडरी मिल्ड्यू,अर्ली ब्लाइट, लेट ब्लाइट, एन्थ्रेक्नोज आदि के दुष्प्रभाव के नियंत्रण के लिए 15-20 दिन में स्प्रे करें। मिर्च और टमाटर की फसल के लिए निसर्गा, स्पर्श, जीवरस का ड्रिप से शुरूआती समय में प्रयोग करने से विल्ट की समस्या नियंत्रित हो जाती है। मिर्च फसल के लिए एनपीके के अलावा समृद्धि 50, अन्नपूर्णा और सृष्टि जिंक हाई,भूमि संजीवनी आदि का प्रयोग करने की सलाह दी गई।

पोषक तत्वों से भरपूर 'आंवला'

- **अंजली सिंह**
  एमएससी (प्रसार शिक्षा एवं संचार प्रबंधन विभाग)
- **पंकज कुमार**, एम.एस.सी. (कृषि प्रसार)
  चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., कानपुर
- **अमन कुमार मौर्य**, एमएससी (उद्यान, फल विभाग)
- **स्नेहा सिंह**, असिस्टेंट प्रोफेसर, उद्यान विज्ञान विभाग
  आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., अयोध्या

आंवला का संरक्षण (मुरब्बा)

आंवला का फल आमतौर पर संरक्षित करने के लिए प्रयोग करते हैं। आंवला का संरक्षण हम एक प्रौढ़ फल को पका के कर सकते हैं। आंवला का मुरब्बा हम बड़े–बड़े फाकों में काटकर या पूरा फल को ज्यादा मात्रा के चीनी में तब तक पकाते हैं जब तक फल पारदर्शी और परिपक्व ना हो जाए, मुरब्बा एक बहुत ही लोकप्रिय और स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ है। यह यकृत और हृदय को ऊर्जा प्रदान करता है। यह दस्त को रोकने और चक्कर के लिए उपयोग में लाया जाता है।

आंवला कैंडी– फल कैंडी उच्च पोषण मूल्य, उच्च स्वीकार्यता और सबसे लम्बे जीवन के वजह से अधिक लोकप्रिय पाया जा रहा है। यह रेसेपी की सामग्री एक किलो आंवला का फल और 700 ग्राम चीनी को उपयोग कर के बनता है। आंवला कैंडी आंवले के मुरब्बे का सूखा प्रतिरूप है।

पेय पदार्थ परोसने के लिए तैयार मिश्रित– आंवला और सेब को साथ मिश्रित करें और उसका जूस बनाएं जो कि उसकी पोषक तत्व और बढ़ेंगे साथ ही आप आंवले का उपयोग मौसम के बाद भी कर सकते हैं।

क्या आंवला का फल एंटी मुटाजेनिक और एंटीनोप्लास्टिक है?

इनविट्रो और इनवियो सिस्टम दोनों के साथ प्रोक्लीनिकल अध्ययनों की तुलना करने से पता चलता है कि आंवला कैंसर रोधी, कीमोप्रिवेंटिव और रेडियो सुरक्षात्मक प्रभाव को रोकता है। आंवला का सेवन साइटोटोक्सिक प्रभाव को कैंसर में कम करता है।

निष्कर्ष– आंवला भविष्य में बहुत ही महत्वपूर्ण पदार्थ माना जा रहा है। इसकी औषधीय और पोषक तत्व के गुणों के कारण उच्च उत्पादकता प्रति इकाई क्षेत्र ज्यादा है और साथ ही बंजर भूमि में भी उपयुक्त है। आंवला में कई सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं जो हमारी इम्युनिटी को मजबूत करती है साथ ही हमें बीमारियों से लड़ने के क्षमता प्रदान करती है। वैज्ञानिक आंवला के उत्पादक और साथ ही पोषक तत्व में दृढ़ के लिए काम कर रहे हैं।

दादी माँ के घरेलू नुस्खे

नकसीर के घरेलू उपचार– चिलचिलाती धूप में अक्सर कुछ लोगों को नाक से खून बहने की शिकायत होती है। इसे नकसीर भी कहा जाता है। यह मौसम के अनुसार शरीर में अधिक गर्मी बढ़ने से भी हो सकता है और कुछ लोगों को अधिक गर्म पदार्थ का सेवन करने से भी। पेश है नकसीर से निपटने के घरेलू उपचार–

त्रिफला : आयुर्वेद का अनमोल उपहार– एक अध्ययन से पता चला है कि त्रिफला का सेवन रेडियोधर्मिता से भी बचाव करता है। प्रयोगों में देखा गया है कि त्रिफला की खुराकों से गामा किरणों के रेडिएशन के प्रभाव से होने वाली अस्वस्थता के लक्षण भी नहीं पाए जाते हैं। इसीलिए त्रिफला चूर्ण आयुर्वेद का अनमोल उपहार कहा जाता है।

प्याज का राज, नुस्खे लाजवाब – कान बहता हो, उसमें दर्द या सूजन हो तो प्याज तथा अलसी के रस को पकाकर दो–दो बूंदें कई बार कान में डालने से आराम मिलता है। यदि कोई अंग आग से जल गया हो तो तुरंत प्याज कूटकर प्रभावित स्थान पर लगाना चाहिए। विषैले कीड़े, बर्र, कनखजूरा और बिच्छू काटने पर प्याज को कुचलकर उसका लेप लगाना चाहिए। बिल्ली या कुत्ते के काटने पर रोगी को डॉक्टर के पास जाने तक प्याज और पुदीने के रस को तांबे के बर्तन पर डालकर प्रभावित स्थान पर लगाइए इससे विष उतर जाएगा।

मीठी शकर के गुणकारी नुस्खे – बादाम को खराब होने से बचाने के लिए कंटेनर में रखने से पहले उसमें तीन–चार चम्मच शक्कर डाल दें, इससे सालों–साल बादाम खराब नहीं होंगे।

आलू के असरकारी नुस्खे – रक्तपित्त बीमारी में कच्चा आलू बहुत फायदा करता है। कभी–कभी चोट लगने पर नील पड़ जाती है। नील पड़ी जगह पर कच्चा आलू पीसकर लगाएं। शरीर पर कहीं जल गया हो, तेज धूप से त्वचा झुलस गई हो, त्वचा पर झुर्रियां हों या कोई त्वचा रोग हो तो कच्चे आलू का रस निकालकर लगाने से फायदा होता है।

पान के औषधीय गुण– भारतीय संस्कृति में पान को हर तरह से शुभ माना जाता है। धर्म, संस्कार, आध्यात्मिक एवं तांत्रिक क्रियाओं में भी पान का इस्तेमाल सदियों से किया जाता रहा है।

कैसे बचें आंखों के दर्द से – तिल के 5 ताजे फूल प्रातःकाल अप्रैल माह में निगलें। इससे पूरे वर्ष आंखें नहीं दुखेंगी। चैत्र के महीने में गोरखमुंडी के 5 या 7 ताजे फूल चबाकर पानी के साथ सेवन करने से आंखों की ज्योति बढ़ती है।

किडनी के लिए खतरनाक जंक फूड

अगर आप जंक फूड के शौकीन हैं तो संभल जाइए क्योंकि यह किडनी को मधुमेह जितना ही नुकसान पहुंचा रहा है।

अध्ययन में सामने आया है कि जंक फूड के प्रभाव से शरीर पर्याप्त में मात्रा में इंसुलिन नहीं बना पाता जिससे शरीर में ग्लूकोज की मात्रा बहुत बढ़ जाती है और यह खून में जमने लगता है। ग्लूकोज की मात्रा असामान्य होने से किडनी के लिए मधुमेह जैसे रोग का खतरा बढ़ जाता है। ब्रिटेन की आंगलीया रस्किन विश्वविद्यालय की शोधकर्ता हावोवी ने कहा कि जंक फूड में ज्यादा वसा होने से मोटापा और टाइप–2 मधुमेह तेजी से बढ़ रहा है जो अवसाद का भी कारण होता है।

पाक्षिक पंचांग

13 से 26 जून 2022
विक्रम संवत् 2079
ज्येष्ठ शुक्ल 14 से आषाढ़ कृष्ण 13 तक

दि. माह	वार		तिथि/त्यौहार
13 जून	सोम	ज्येष्ठ शुक्ल	14
14 जून	मंगल	---------	15 स्ना.दान पूर्णिमा
15 जून	बुध	आषाढ़ कृष्ण	1
16 जून	गुरु	---------	2
17 जून	शुक्र	---------	3 गणेश चतुर्थी व्रत
18 जून	शनि	---------	4 पंचक 12.13 रात से
19 जून	रवि	---------	5/6 पंचक
20 जून	सोम	---------	7 पंचक
21 जून	मंगल	---------	8 पंचक, शीतलाष्टमी
22 जून	बुध	---------	9 पंचक
23 जून	गुरु	---------	10 पंचक, 10.12 दिन तक
24 जून	शुक्र	---------	11 योगिनी एकादशी
25 जून	शनि	---------	12
26 जून	रवि	---------	13 प्रदोष व्रत

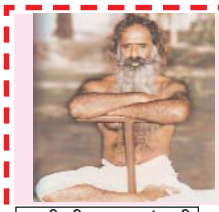

स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी महाराज

(गतांक से आगे)
श्रीमद्भगवद्गीता

।। यथार्थ गीता ।।

(ॐ श्री परमात्मने नमः)

।। अथ द्वादशोऽध्यायः ।।

अर्जुन ने इस अध्याय में प्रश्न किया कि– भगवन! अनन्य भाव से जो आपका चिन्तन करते हैं और दूसरे वे जो अक्षर अव्यक्त की उपासना करते हैं, इन दोनों में उत्तम योगवेत्ता कौन है? योगेश्वर श्रीकृष्ण ने बताया कि दोनों मुझे ही प्राप्त होते हैं, क्योंकि मैं अव्यक्त स्वरूप हूं। किन्तु जो इन्द्रियों को वश में रखते हुए मन को सब ओर से समेटकर अव्यक्त परमात्मा में आसक्त हैं, उनके पथ में क्लेश विशेष है। जब तक देह का अभ्यास (भान) है, तब तक अव्यक्त स्वरूप की प्राप्ति दुःखपूर्ण है, क्योंकि अव्यक्त स्वरूप तो चित्त के निरोध और विलयकाल में मिलेगा। उसके पूर्व उसका शरीर ही बीच में बाधक बन जाता है। 'मैं हूं, मैं हूं, 'मुझे पाना है'– कहते–कहते अपने शरीर की ही ओर घूम जाता है। उसके लड़खड़ाने की अधिक सम्भावना है। अतः अर्जुन! तू सम्पूर्ण कर्मों को मुझमें अर्पण करके अनन्य भक्ति से मेरा चिन्तन कर। जो मेरे परायण भक्तजन सम्पूर्ण कर्मों को मुझमें अर्पण करके मानव शरीरधारी मुझ सगुण योगों के रूप का ध्यान द्वारा तैलधारावत् निरन्तर चिन्तन करते हैं, उनका मैं शीघ्र ही संसार सागर से उद्धार करने वाला हो जाता हूं। अतः भक्तिमार्ग श्रेष्ठ है।

अर्जुन! मुझमें मन को लगा। मन न लगे तो भी लगाने का अभ्यास कर। जहां भी चित्त जाय, पुनः घसीटकर उसका विरोध कर। यह भी करने में असमर्थ है तो तू कर्म कर। कर्म एक ही है, यज्ञार्थ कर्म। तू कार्यम् कर्म करता भर जा, दूसरा न कर। उतना ही कर, पार लगे चाहे न लगे। यदि यह भी करने में असमर्थ है तो स्थितप्रज्ञ, आत्मवान्, तत्वज्ञ महापुरुष की शरण होकर सम्पूर्ण कर्मफलों का त्याग कर। ऐसा त्याग करने से तू परमशान्ति को प्राप्त हो जायेगा।

तत्पश्चात् परमशान्ति को प्राप्त हुए भक्त के लक्षण बताते हुए योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कहा– जो सम्पूर्ण भूतों में द्वेषभाव से रहित है, जो करुणा से युक्त और दयालु है, ममता और अहंकार से रहित है, वह भक्त मुझे प्रिय है। जो ध्यान–योग में निरन्तर तत्पर और आत्मवान्, आत्मस्थित है, वह भक्त मुझे प्रिय है। जिससे न किसी को उद्वेग प्राप्त होता है और स्वयं भी जो किसी से उद्वेग को प्राप्त नहीं होता, ऐसा भक्त मुझे प्रिय है। जो शुद्ध है, दक्ष है, व्यथाओं से उपराम है, सर्वारम्भों को त्यागकर जिसने पार पा लिया है, ऐसा भक्त मुझे प्रिय है। सम्पूर्ण कामनाओं का त्यागी और शुभाशुभों का पार पाने वाला भक्त मुझे प्रिय है। जो निन्दा और स्तुति में समान और मौन है, मनसहित जिसकी इन्द्रियां शांत और मौन है, जो किसी भी प्रकार शरीर–निर्वाह में सन्तुष्ट और रहने के स्थान में ममता से रहित है, शरीर रक्षा में भी जिसकी आसक्ति नहीं है, ऐसा स्थितप्रज्ञा भक्तिमान् पुरुष मुझे प्रिय है।

इस प्रकार श्लोक ग्यारह से उन्नीस तक योगेश्वर श्रीकृष्ण ने शान्ति प्राप्त योगयुक्त भक्त की रहनी पर प्रकाश डाला, जो साधकों के लिये उपादेय है। अन्त में निर्णय देते हुए उन्होंने कहा– अर्जुन! जो मेरे परायण हुए अनन्य श्रद्धा से युक्त पुरुष इस ऊपर कहे हुए धर्ममय अमृत को निष्कामप्रभाव से भली प्रकार आचरण में ढालते हैं, वे भक्त मुझे अतिशय प्रिय है। अतः समर्पण के साथ इस कर्म में प्रवृत्त होना श्रेयतर है, क्योंकि उसके हानि–लाभ को जिम्मेदारी वह ईष्ट सद्गुरु अपने ऊपर ले लेते हैं। यहां श्रीकृ्ण ने स्वरूपपस्थ महापुरुष के लक्षण बताये, उनकी शरण में जाने को कहा और अन्त में अपनी शरण में आने की प्रारणा देकर उन महापुरुष के समकक्ष अपने को घोषित किया। श्रीकृष्ण एक योगी, महात्मा थे।

इस अध्याय में भक्ति को श्रेष्ठ बताया गया, अतः इस अध्याय का नामकरण 'भक्तियोग' युक्तिसंगत है।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भवद्गीतासुपषित्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसम्वादे 'भक्तियोगो' नाम द्वादशोऽध्यायः ।।12।।

इस प्रकार श्रीमद्भगवतगीतारूपी उपनिषद् एवं ब्रह्मविद्या तथा योगाशास्त्र विषयक श्रीकृष्ण और अर्जुन के संवाद में 'भक्तियोग' नामक बारहवां अध्याय पूर्ण होता है।

।। हरिः ॐ तत्सत् ।। **क्रमशः**

(प्रस्तुतिः सुभाष पटेल), मो.: 9009726352
email : subhashpatel072@gmail.com

मजबूत पैदावार और सुरक्षित फसल के लिए

धानुका एग्रीटेक ने मध्यप्रदेश में लांच किए 2 नए उत्पाद

इंदौर। बदलते मौसम के साथ खेती के पारंपरिक तरीकों में भी बदलाव आया है। आज खेती को अधिक उन्नत और फसलों को अधिक सुरक्षित बनाने के लिए बेहतर उत्पाद बाजार में उपलब्ध हैं। देश की अग्रणी कृषि रसायन कम्पनियों में से एक, धानुका एग्रीटेक लि. ने पिछले कई वर्षों से फसलों का सुरक्षा कवच बनकर किसानों के फायदे के लिए कई शानदार उत्पाद दिए हैं। आज यह देशभर में किसानों का विश्वसनीय ब्रांड बन गया है। इसी कड़ी में धानुका एग्रीटेक ने इंदौर, मध्यप्रदेश में लांच किए हैं 2 नए उत्पाद। कॉर्नेक्स (खरपतवारननाशक) और जैनेट (फफूंदनाशक) नाम के ये उत्पाद मक्का व टमाटर की फसलों के लिए उपयोगी होंगे। इसके साथ ही 3 और उत्पाद फूजी सुपर, क्रेज-एक्स और टर्मिनल भी बाजार में उतारे गए हैं। कॉर्नेक्स और जैनेट दोनों ही 9 (3) ब्लॉकबस्टर उत्पादों की श्रेणी में आते हैं। ये दोनों उत्पाद पूर्व में महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों और उत्तर प्रदेश के आगरा में लांच हो चुके हैं और देश के अन्य राज्यों मे भी इनकी शीघ्र लॉन्चिंग की जाएगी।

श्री राहुल धानुका

इस बारे में अधिक जानकारी देते हुये **धानुका एग्रीटेक के सीओओ, श्री राहुल धानुका** ने कहा-'मुझे इन पांच नए उत्पादों की जानकारी

आपसे साझा करते हुए बेहद प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। धानुका एग्रीटेक लि. में हमने हमेशा से नई तकनीकों व विधियों के साथ मिलकर फसलों की सम्पूर्ण सुरक्षा की दिशा में काम किया है। हमारे सभी उत्पाद पूरी रिसर्च के साथ किसानों को ज्यादा से ज्यादा फायदा पहुंचाने के इरादे से तैयार किये जाते हैं। खरपतवारनाशक कॉर्नेक्स मक्का की फसल उगाने वाले किसानों के लिए एक वन-स्टॉप सॉल्यूशन की तरह होगा। जो साइप्रस रोटंडस, प्रमुख चौड़ी एवं सकरी पत्तियों वाले खरपतवार को नियंत्रित कर मक्का की फसल को महत्वपूर्ण रूप से सुरक्षा देगा। इसको जापान के निसान कैमिकल्स के साथ तकनीकी साझेदारी में तैयार किया गया है और पहली बार इस तरह का प्रभावशाली उत्पाद भारत में प्रस्तुत किया जा रहा है।

- **जापानी तकनीक से बने दो 9 (3) ब्लॉकबस्टर उत्पादों के साथ ही 3 अन्य उत्पाद भी किये लांच**
- **मक्का और टमाटर की फसलों में खरपतवार, फफूंद और बैक्टीरिया जैसे दुश्मनों से देंगे ठोस सुरक्षा**

वहीं जैनेट को भी जापान की दो प्रमुख कम्पनियों- होक्को कैमिकल इंडस्ट्री कम्पनी लि. व निप्पोन सोडा कम्पनी लि. के साथ साझेदारी में धानुका द्वारा तैयार किया गया है। यह फंगीसाइड और बैकरियासाइड का मिश्रण है जो टमाटर की फसलों को जेड+ स्तर की सुरक्षा दे सकता है। यह पावडरी मिल्ड्यू और पत्तियों पर बैक्टीरियल धब्बों को नियंत्रित करने में कारगर है।

इन दो प्रमुख उत्पादों के अलावा शेष तीन उत्पादों में फूजी सुपर और क्रेज -एक्स धान की फसल के लिए खरपतवारनाशक का काम करते हैं और टर्मिनल भी एक नॉन सिलेक्टिव (विशेष प्रकार के खरपतवार के बजाय सम्पर्क में आने वाले हर खरपतवार को नष्ट करने वाला-गैर चयनात्मक) खरपतवारनाशक है जो फसलों को सुरक्षा देता है।

अपनी प्रोडक्ट रेंज में शामिल इन नए समाधानों के साथ, धानुका किसानों को उन्नत तकनीकों के साथ और सक्षम व मजबूत बनाएगा, जिससे वे अपनी फसलों को खरपतवार, फफूंद व बैक्टीरिया से सुरक्षा प्रदान कर सकें और हर वर्ष किसानों की फसल को होने वाले नुकसान से बचाकर देश की आर्थिक वृद्धि में भी सहायक बन सकें।

नए उत्पादों की लॉन्चिंग के इस आयोजन में धानुका के सीओओ श्री राहुल धानुका, स्टेट हेड (एमपी) श्री चेतन सरावगी के साथ ही प्रोडक्ट मैनेजर श्री अमित मिश्रा व श्री शरद सिकरवार एवं डीजीएम श्री जितेंद्र कुमार सिंह, श्री संजय कुमार सिंह, श्री अखिल शर्मा भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर उपस्थित धानुका के चैनल पार्टनर्स को नए लांच उत्पादों सम्बन्धी तकनीकी प्रस्तुतिकरण भी दिया गया।

हर्ष ब्रांड के प्याज बीज, किसानों को दे खुशियां

इंदौर। देश की प्रसिद्ध बीज कम्पनी आरएसआर सीड्स कार्पोरेशन के पास हर्ष ब्रांड के नाम से प्याज बीजों की विस्तृत श्रृंखला है। जिनसे किसानों को भरपूर उत्पादन मिलता है। यही कारण है कि किसान इन्हीं किस्मों को पसंद करते हैं। इस खरीफ सत्र में कम्पनी द्वारा किसानों के लिए लक्की ड्रॉ कूपन के माध्यम से उपहार योजना रखी गई है,जिसका किसान भाई लाभ उठा सकते हैं।

कम्पनी के एसपीडीए विश्वम पंड्या इंटरप्राइजेस, इंदौर के श्री नितेश पंड्या ने कृषक जगत को बताया कि आरएसआर सीड्स कार्पोरेशन, औरंगाबाद, प्याज बीज की प्रतिष्ठित कम्पनी है, जिसके चैयरमैन श्री एम. के. पंवार और एमडी श्री आरएस राठौड़ हैं। प्याज बीज के लिए इसका हर्ष ब्रांड लोकप्रिय है। इस वर्ष खरीफ हेतु प्याज बीज की उपलब्ध किस्में हैं-हर्ष नासिक लाल (एन-53),हर्ष एएफडीआर,हर्ष फुले समर्थ, हर्ष भीमा सुपर और हर्ष डार्क रेड (चाइना रेड)। इनमें से हर्ष फुले समर्थ गहरा लाल, डबल पत्ती वाला प्याज है, जो बल्व के आकार का है। यह नर्सरी के ट्रांसप्लांट से 90-95 दिन में पकने वाली किस्म है। जबकि हर्ष भीमा सुपर का रंग गहरा गुलाबी लाल होता है। इसके गुणधर्म हर्ष नासिक लाल के समान है, वहीं हर्ष डार्क रेड (चाइना रेड) गहरा चमकीला लाल होता है। यह भी डबल पत्ती वाला होकर मध्यम आकार का होता है। यह नर्सरी के ट्रांसप्लांट 80-85 दिन में पकने वाली किस्म है। इन सभी का बीज उन्नत किस्म का होने से अंकुरण का प्रतिशत अधिक होता है। गुणवत्तायुक्त इन बीजों की मात्रा नर्सरी में ढाई किलो तक और अधिकतम 3-4 किलो/एकड़ लगती है। जबकि अन्य बीजों की मात्रा 6-8 किलो/एकड़ लगती है।

श्री पंड्या ने बताया कि इस वर्ष कम्पनी द्वारा किसानों के लिए हर्ष ब्रांड के बीज खरीदी पर लक्की ड्रॉ कूपन के माध्यम से उपहार योजना लागू की गई है, जिसमें रिचार्जेबल टॉर्च, ट्रॉली बैग,साइकिल, इलेक्ट्रिक चूल्हा, सोलर सिगड़ी, लेपटॉप बैग, लेपटॉप और इलेक्ट्रिक स्कूटी के अलावा अन्य आकर्षक उपहार रखे गए हैं। किसान द्वारा हर्ष ब्रांड का कोई भी किस्म का बीज नजदीकी दुकानदार से खरीदने पर पैकेट के अंदर पाउच में एक कूपन निकलेगा। कूपन पर जो उपहार होगा वह किसान को जरूर मिलेगा। किसान को उस कूपन पर अपनी पूरी जानकारी लिखकर कूपन की फोटो हेल्प सेंटर नंबर 9294506699 पर भेजना जरूरी है। उसके बाद संबंधित किसान को उपहार कैसे मिलेगा इसकी जानकारी दी जाएगी।

खरगोन समाचार

वेदर स्टेशन से जुड़ेंगे किसान, पल-पल के मौसम की मिलेगी सटीक जानकारी

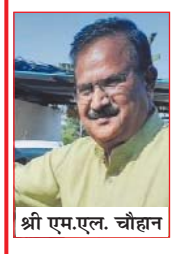
श्री एम.एल. चौहान

कृषि कार्यों में मौसम का सटीक अनुमान बेहद जरूरी हो जाता है इसके चलते किसान खेती से जुड़ी अपनी कार्ययोजना बना सकते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के तहत इकार्डा संस्था किसानों की फसल संबंधी मौसम की अनेक जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विकासखंड झिरन्या के ग्राम नहालदरी में वेदर डिवाइस की स्थापना करेंगे। उप संचालक कृषि श्री एम. एल. चौहान ने बताया कि कपास एवं गेहूं फसल आधारित फसल चक्र का अध्ययन भी किया जाएगा जिससे कपास की फसल में लगने वाले कीट एवं बीमारियों की जानकारी पूर्व में ही प्राप्त होगी तथा उसका निदान समय पर किया जा सकेगा। वैज्ञानिक से प्राप्त जानकारी अनुसार फसल की मैपिंग की जाएगी, जिसमें क्षेत्र में कपास की फसल में कौन-कौन सी बीमारियां हैं इसके बारे में किसानों को जानकारी दी जाएगी। इस हेतु प्रमुख वैज्ञानिक इकार्डा मोरक्को से डॉ. विनय नांगिया जल विशेषज्ञ एवं वैज्ञानिक, डॉ. अजीत गोविंद रिमोट सेंसिंग वैज्ञानिक, डॉ. मीना देवकोटा एग्रोनामी वैज्ञानिक, एफएलआरपी, इकार्डा अमलाह म.प्र. से वैज्ञानिक डॉ. निग्मा नाडा स्वाइन प्लेट फार्म मैनेजर, डॉ. रीना मेहरा कृषि वैज्ञानिक ने जिले का भ्रमण किया वैज्ञानिक दल के साथ आत्मा के बीटीएम श्री अनिल नामदेव एवं ग्रा.कृषि वि.अधिकारी श्री संतोष पाटीदार व ग्राम के कृषक उपस्थित थे।

80 हजार हेक्टर में कपास की बोनी पूर्ण

मप्र में निमाड़ घाटी कृषि जलवायु क्षेत्र के नाम से पहचान रखने वाले खरगोन जिले में इस वर्ष 4 लाख 16 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में खरीफ फसलें लगाई जाएंगी। जिले के उपसंचालक कृषि श्री एम.एल. चौहान बताते हैं कि कपास के 2 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में से अभी तक गर्मी में किसानों ने कपास की 80 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में बोनी कर दी है। शेष 1 लाख 20 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में बोनी होना शेष है। इसके अलावा खरीफ सीजन में प्रमुख फसलों के क्षेत्र में सोयाबीन 70 हजार हेक्टेयर, मक्का 81 हजार हेक्टेयर का रकबा प्रस्तावित है। अन्य खरीफ फसल ज्वार, उड़द, मूंग, अरहर, मूंगफली एवं सीमित क्षेत्र में धान, बाजरा, तिल, अरण्डी, सूर्यमुखी भी किसान लगाते हैं। प्रदेश में सर्वाधिक कपास एवं मिर्च की फसल इसी जिले में की जाती है। किसानों को गुणवत्तापूर्ण खाद, बीज उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से 790 नमूने लेने का लक्ष्य रखा है। इसके विपरीत 300 नमूने लेकर प्रयोगशाला में भेजे थे जिनमें दो अमानक पाए जाने पर नियम के तहत कार्रवाई की जा रही है। नमूना संग्रहण जारी है। किसानों को समय पर उर्वरक उपलब्ध करवाने के लिए सरकारी समितियों एवं निजी विक्रेताओं के पास पर्याप्त मात्रा में उर्वरकों का भंडारण करवाया गया है।

अब कृषक जगत वेबसाइट पर भी उपलब्ध
www.krishakjagat.org

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं इंटरनेट ऑफ थिंग्स का कृषि में योगदान पर वेबिनार

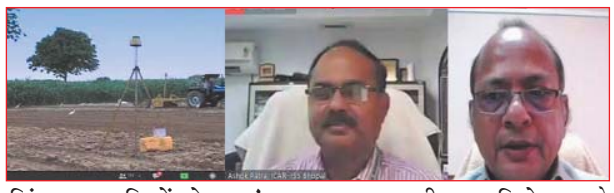

भोपाल। भा.कृ.अनु.परि.- केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाने के क्रम में अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत एक राष्ट्रीय अधिवेशन जिसका विषय 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं इंटरनेट ऑफ थिंग्स का कृषि में योगदान' का आयोजन गत दिनों संस्थान में ऑनलाइन प्रक्रिया द्वारा किया गया। राष्ट्रीय अधिवेशन के समापन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. ए.के.पात्रा, निदेशक, भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान,भोपाल उपस्थित थे। मुख्य अतिथि डॉ.पात्रा ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं इंटरनेट ऑफ थिंग्स का कृषि में योगदान विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। यह जानकारी डॉ. मनोज त्रिपाठी द्वारा दी गई।

पौधे के साथ सहजीविता रखने वाला माइकोराइजा फर्टिलाइजर

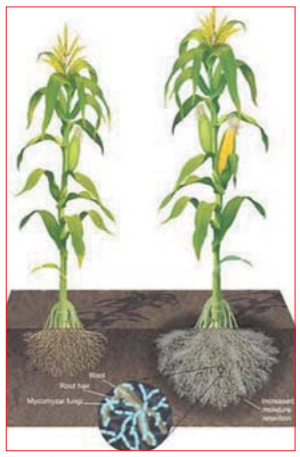

इंदौर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के वैज्ञानिकद्वय दीपांती चौरसिया और डॉ. महावीर पी शर्मा के अनुसार माइकोराइजा एक प्रकार का फ़ंगस है, जो पौधे के साथ सहजीविता रखता है। हमारी भूमि पर 90 प्रतिशत पौधों के साथ संबंध बना सकता है। इस फर्टिलायजर के उपयोग से रसायनिक केमिकल की मात्रा को कम कर सकते हैं, क्योंकि यह फर्टिलायजर ना सिर्फ फास्फोरस की मात्रा बढ़ाकर उत्पादन में सहयोग करता है, बल्कि माइकोराइजा फर्टिलाइजर के निम्नलिखित फायदे भी हैं-

❖ यह वातावरण की बढ़ती हुई कार्बन डाय ऑक्साइड को गलोमेलिन प्रोटीन के द्वारा कम करता है।

❖ यह सूक्ष्म पोषक तत्वों की पूर्ति करता है जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस, जिंक, कॉपर और अन्य।

❖ पानी की कमी होने पर माइकोराइजा का हाइफा जड़ों से दूर तक जाकर पानी पौधे को प्रदान करता है।

❖ हेवी मेटल वाली मिट्टी जो नाले के किनारे या उद्योग से निकले पानी से मिट्टी अवांछनीय हो जाती है, वहाँ भी यह फर्टिलाइजर के उपयोग से पौधों को उगाया जा सकता है।

❖ यह फर्टिलाइजर में रोगी जीवाणु नियंत्रण में भी कारगर साबित हुआ है।

❖ यह सभी प्रकार के जैविक और और अजैविक तनाव की स्थिति में पौधे को सहयोग करता है जैसे खारी मिट्टी, भारी धातु वाली जमीन, सूखा और अन्य क्षेत्र में।

त्रिपक्षीय बैठक में 4 दिन में बकाया भुगतान करने का हुआ फैसला

इंदौर। गत दिनों छावनी मंडी में किसान संगठनों के आह्वान पर किसानों ने अपने बकाया भुगतान की मांग को लेकर नीलामी रोक दी गई। बड़ी संख्या में एकत्रित किसानों ने मंडी समिति कार्यालय के बाहर सभा कर मंडी अधिकारियों के समक्ष प्रदर्शन किया। 4 घंटे नीलामी कार्य रुकने के बाद किसान संगठनों, व्यापारी प्रतिनिधि, मंडी अधिकारियों व भार साधक अधिकारी की मौजूदगी में हुई त्रिपक्षीय बैठक में 4 दिन में व्यापारी द्वारा भुगतान करने और अब किसानों को उनकी फसल का नकद भुगतान करने का निर्णय लिया गया ।

भार साधक अधिकारी (अपर कलेक्टर) श्री राजेश राठौड़, मंडी सचिव श्री नरेश परमार, प्रांगण अधिकारी श्री रमेश परमार व श्री नरेन्द्र दवे की मौजूदगी में व्यापारी श्री राजदीप सिंह, दीपाली सिंह तथा किसान संगठनों के प्रतिनिधि श्री रामस्वरूप मंत्री, श्री बबलू जाधव, श्री शैलेन्द्र पटेल, श्री अरुण चौहान,श्री सोनू शर्मा सहित अन्य किसान प्रतिनिधियों की संयुक्त बैठक हुई। जिसमें निर्णय लिया गया कि व्यापारी फर्म जया लक्ष्मी फूड्स 4 दिन के अंदर सभी किसानों का बकाया भुगतान करेगी तथा मंडी में होने वाली नीलामी में फसल को जो भी व्यापारी खरीदेगा वह 2 लाख रुपए तक का नगद भुगतान करेगा और यदि उसी दिन किसान को भुगतान नहीं मिल मंडी समिति को सूचित करने पर मंडी समिति तत्काल व्यापारी से भुगतान कराएगी।

साई द्वारका सीड
सभी प्रकार के उन्नत किस्म के बीज निर्माता- गेहूं, चना, डॉलर चना, सोयाबीन, मूंग-उड़द, तुअर, ज्वार, बाजरा, धान, मूंगफली, सरसों, प्याज, भिंडी अन्य प्रकार के बीज नेचुरली तैयार किये जाते हैं।
सम्पर्क : साईं द्वारका इंटरप्राइजेस 585/2, दयालपुरा मार्ग, गोगावा, जिला-खरगोन (म.प्र.), मो. : 8770065739
फर. 23

DSP DYNAMIC / SPRAYMAX
भारत का एकमात्र 4 Stroke
Sprayer आई एस आई इंजिन के साथ
IS 7347:1974
CM/L - 4100081267
Powered by: Jonathan

VIGILANCE
V S PATEL & COMPANY, INDORE (M.P.)
M. 94253 50729 / 87708 29898

म.प्र. की प्रमुख मंडियों में थोक भावों का साप्ताहिक विश्लेषण (9 से 15 जून 2022 की स्थिति (भाव प्रति क्विंटल में)

मंडी	मॉडल रेट	मंडी	मॉडल रेट	मंडी	मॉडल रेट	मंडी	मॉडल रेट
गेहूं		जबलपुर	1920	सिवनी	1930	ग्वालियर	6600
अलीराजपुर	2000	झाबुआ	2050	शाजापुर	1981.81	जबलपुर	5300
अनूपुर	1834.8	कटनी	1942	शिवपुरी	1888.14	कटनी	6283
अशोकनगर	1975	खंडवा	2018	सीधी	1860	मुरैना	6775
भिंड	2006.33	खरगोन	2150	सिंगरोली	1900	पन्ना	6100
छतरपुर	1875.38	मंदसौर	1955.12	टीकमगढ़	1810	रायसेन	5600
दमोह	1902.35	मुरैना	2050	उज्जैन	2032.41	राजगढ़	6250
दतिया	2008.28	नरसिंहपुर	1915.24	विदिशा	2575	रीवा	5986.53
देवास	1981.77	पन्ना	1946.19	**औसत**	**1982.56**	सागर	5700
धार	2061.42	रायसेन	2000			सतना	6220
डिंडोरी	1825	राजगढ़	1968.08	**सरसों**		शाजापुर	5500
गुना	1970	रतलाम	2184.69	भिंड	6616.43	श्योपुर	6650
ग्वालियर	2115	रीवा	1917.63	छतरपुर	6121.7	शिवपुरी	6728.16
हरदा	2000	सागर	1954.3	दमोह	5550	विदिशा	6300
होशंगाबाद	1968	सतना	1937.83	दतिया	6456.75	**औसत**	**6133.29**
इंदौर	1900	सीहोर	2010	गुना	5795		

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल
विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5 प्रतिशत अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

multiplex
मल्टीप्लेक्स®
मल्टीप्लेक्स किसान खुशहाल किसान।

• सूक्ष्म पोषक तत्व • जैविक खाद • जैव उर्वरक • जैव कीटनाशक • कीटनाशक • बीज
मल्टीप्लेक्स की जैविक खाद अपनाये और बंजर होती जमीन को बचाए
कर्नाटका एग्रो केमिकल्स - बैंगलोर
Email: multiplex@multiplexgroup.com
website: www.multiplexgroup.com
Farmers' first choice since 1974

बेरोजगार युवाओं के लिए अपने व्यवसाय का सुनहरा अवसर
अगर आप अपने क्षेत्र में (खाद, बीज, कीटनाशक, मशीनरी) कृषि व्यवसाय करना चाहते हैं तो सम्पर्क करें। आपको कृषि व्यवसाय से सम्बन्धित सभी उत्पाद कम्पनियों के मूल्य पर उपलब्ध करवायेंगे तथा साथ ही साथ आपको तकनीकी ज्ञान भी देंगे जिसके कारण आप अपने व्यवसाय में तरक्की करेंगे और अपने क्षेत्र के किसानों की आमदनी बढ़ाने में सहायक होंगे।
सम्पर्क : धान्वी सीड्स एंड पेस्टीसाइड
भोपाल-सीहोर मेन रोड, भोपाल (म.प्र.)
मो. : 9009231651, 9827049729, 6260757302

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि.
◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि.
◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ
◆ डयूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया
◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
March. 21
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कृषक जगत की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
श्री राजीव कुशवाह, कुशवाह न्यूज एजेंसी, नागझिरी, मो. : 8964063282
श्री दिलीप दसोंधी. जेल रोड, मंडलेश्वर, जिला-खरगोन, मो.: 9826594654
श्री मनोज साहू, दमोह रोड गढ़ाकोटा, जिला-सागर, मो.: 7869933019

डॉ. मिश्र को नास फैलोशिप अवॉर्ड

जबलपुर। भाकृअप - खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र को संरक्षित कृषि और खरपतवार प्रबंधन पर अनुसंधान में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली ने अपनी प्रतिष्ठित फैलोशिप प्रदान की।

उक्त नास फैलोशिप अवॉर्ड नई दिल्ली में आयोजित अकादमी की 29वीं वार्षिक आमसभा बैठक के दौरान अकादमी के अध्यक्ष, सचिव डेयर और महानिदेशक भाकृअप डॉ. त्रिलोचन महापात्रा द्वारा प्रदान की गई।

उल्लेखनीय है कि पूर्व में भी डॉ. मिश्र को विभिन्न अनुसंधानों में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

सुमिल के दो नए उत्पाद ट्रिओन जेडएफएस और ब्लैक बेल्ट लांच

नई दिल्ली/इंदौर। प्रसिद्ध कीटनाशक कम्पनी सुमिल केमिकल इंडस्ट्रीज प्राइवेट लि. ने गत दिनों नई दिल्ली में अपने दो नए उत्पाद ट्रिओन जेडएफएस और ब्लैक बेल्ट लांच किए। इस मौके पर कम्पनी के प्रेसिडेंट श्री राजेंद्र अखानी, वाइस प्रेसिडेंट (विपणन) श्री हितेश पटेल, फसल संरक्षण प्रमुख श्री राधेश्याम, जोनल मैनेजर (मप्र और छग) श्री इमरान आरिफ कुरैशी और बीएच श्री एन.बी.पटेल सहित अन्य उपस्थित थे।

श्री राधेश्याम ने दोनों उत्पादों की जानकारी साझा करते हुए कहा कि ट्रिओन जेडएफएस एक अनूठा उत्पाद है, क्योंकि यह निष्क्रिय सामग्री कीटनाशकों के निर्माण के लिए उपयोग किए जाने वाले सल्फर 70 प्रतिशत और जिंक ऑक्साइड 13 प्रतिशत के साथ प्रतिस्थापित किया जाता है, इससे अक्रिय/असक्रिय यौगिकों को पोषण से प्रतिस्थापित करने से पौधों की सुरक्षा होती है, इससे न केवल पौधों को आवश्यक पोषण मिलता है, बल्कि यह मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है और किसानों का सबसे अच्छा विकल्प है यह दुनिया का पहला उत्पाद है जिसमें कीटनाशक और पोषक तत्व का संयोजन किया गया है।

फसल संरक्षण प्रमुख ने कहा कि दूसरा नया उत्पाद ब्लैक बेल्ट ड्राई कैप प्रौद्योगिकी आधारित उत्पाद है, जिसमें पानी को फैलाने योग्य कणिकाएं (डब्ल्यूडीजी) होती हैं। यह नियंत्रित रिलीज गुणों के अलावा सूत्रीकरण के साथ अद्वितीय अंतर कारक है। गंधहीन यह उत्पाद लंबे समय तक अवशिष्ट नियंत्रण तो करता ही है, धान में तना छेदक को भी नियंत्रित करता है। इसे 270-300 ग्राम प्रति एकड़ और 200 लीटर पानी के साथ मिलाकर प्रयोग करने की सलाह दी जाती है।

पोषक तत्वों से भरपूर - ग्रोप्लस

बड़वानी। सुनील तिवारी,बड़वानी के ग्राम-देवला, तहसील-ठिकरी ने बताया कि कपास की फसल में ग्रो-प्लस के उपयोग से उपज में वृद्धि और अच्छी गुणवत्ता वाली उपज मिलती है। 5 एकड़ कपास की फसल में उर्वरक प्रबंधन में कोरोमण्डल इन्टरनेशनल लि. का उत्पाद ग्रो-प्लस प्रयोग किया।

श्री तिवारी बताते हैं कि मैंने खाद प्रबंधन में उपयोग किया, पहले मैं डीएपी और 12:32:16 जैसे उर्वरकों का उपयोग फसलों में करता था। ग्रो-प्लस का उपयोग करने के बाद मुझे अन्य खादों की तुलना में सबसे अच्छे परिणाम देखने को मिले। प्रारंभिक अवस्था से फसल की वृद्धि तक फसल बहुत अच्छी थी, पूरी फसल की वृद्धि एक समान थी जैसे पौधे में डेंडू (घेटे) ऊपर से नीचे तक अच्छे लगे थे। उत्पादन में 10-15 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

मुख्य रूप से ग्रो-प्लस उत्पाद में कैल्शियम, फास्फोरस, जिंक और बोरान पोषक तत्वों का पूरा मिश्रण है पर पूरी तरह से घुलनशील है, मिट्टी में कोई अम्लता प्रभाव नहीं छोड़ता है। अत: मैं किसान भाईयों से यही कहना चाहूंगा कि ऐसे उर्वरकों का चयन करें जो हमारी मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार और फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए सहायक हो।

कम्पनी के सीनियर एग्रोनॉमिस्ट श्री प्रमोद कुमार पांडे ने बताया कि आप सभी फसलों में खाद प्रबंधन के लिए 'ग्रो-प्लस' उत्पाद का उपयोग कर सकते हैं और कम्पनी के अधिकारी समय-समय पर हमारी फसल का निरीक्षण करते हैं और किसानों को मीटिंग एवं प्रदर्शन प्लांट दिखाने जैसे प्रोग्राम करते हैं।

महिंद्रा युवो टेक + सीरीज के छह नए ट्रैक्टर मॉडल लॉन्च

नए मॉडल्स 37-50 एचपी (27.6-36.7 किलोवाट) श्रेणी में, महिंद्रा के 6 साल के वारंटी प्रोग्राम के साथ

मुंबई। महिंद्रा ट्रैक्टर, वॉल्यूम के आधार पर दुनिया के सबसे बड़े ट्रैक्टर निर्माता ने युवो टेक+ ब्रांड के तहत छह नए मॉडल प्रस्तुत किये हैं। महिंद्रा युवो टेक+ को विश्व स्तर के मानकों के अनुसार चेन्नई स्थित महिंद्रा रिसर्च वैली (एमआरवी) में डिजाइन और विकसित किया गया है। महिंद्रा ट्रैक्टर्स ने 3-सिलेंडर एम-जिप इंजन के साथ 275 युवो टेक+, 405 युवो टेक+ और 415 युवो टेक+ को लॉन्च किया और 4 सिलेंडर ईएलएस इंजन के साथ 475 युवो टेक+, 575 युवो टेक+ और 585 युवो टेक+ को लॉन्च किया। आगामी महीनों में इन नए प्रोडक्ट्स को जल्द ही पूरे भारत में लॉन्च किया जाएगा।

युवो टेक+ मॉडल का विस्तार करते हुए, 37-50 एचपी (27.6-36.7 किलोवाट) पावर बैंड में लॉन्च किए गए छ: नए मॉडल्स 4-व्हील ड्राइव, ड्युअल क्लच, सिल्प्टो, ऑक्जिलियरी वाल्व और 2-स्पीड पीटीओ जैसी प्रमुख विशेषताओं से सुसज्जित हैं जो इसे 30 से अधिक कृषि अनुप्रयोगों के लिए उपयुक्त बनाते हैं। लॉन्च के बारे में बताते हुए, **श्री हेमंत सिक्का, प्रेसिडेंट-फार्म इक्विपमेंट सेक्टर, महिंद्रा एंड महिंद्रा लि.** ने कहा, 'युवो टेक+, टेक्नोलॉजी में नं.1, हर काम में नं.1 के अपने ब्रांड वादे को पूरा करता है जिससे कृषि में बदलाव और जीवन में समृद्धि की महिंद्रा फार्म इक्विपमेंट सेक्टर के उद्देश्य की झलक मिलती है। गति और दक्षता को बढ़ाने के लिए नई तकनीकों को अपनाने वाले किसान के साथ, युवो टेक+ अपने सेगमेंट में सबसे उन्नत और बहुमुखी ट्रैक्टर रेंज है, को भारतीय किसान के लिए बेहतर कमाई के लिए उत्पादकता, आराम और बचत का एक विजेता सूत्र प्रदान करने के लिए विकसित किया गया है। इस लॉन्च के साथ, हम आश्वस्त हैं कि युवो टेक+ श्रृंखला के ये उत्पाद ट्रैक्टर बाजार में हमारी नेतृत्वकारी स्थिति को और मजबूत करेंगे।'

नई महिंद्रा युवो टेक+ ट्रैक्टर रेंज की मुख्य विशेषताएं और लाभ

- इंजन-उन्नत और शक्तिशाली 3- सिलेंडर एम-जिप इंजन और 4 सिलेंडर ईएलएस इंजन
- उच्च बैकअप टॉर्क - गियर बदले बिना लोड के अचानक परिवर्तन के साथ भी अच्छा काम
- उच्च अधिकतम टॉर्क- न्यूनतम आरपीएम ड्रॉप 197 एनएम के साथ विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए उपयुक्त
- सर्वोत्तम पीटीओ पावर - बड़े उपकरणों 33.9 किलोवाट (45.5 एचपी) के साथ लंबे समय तक परिचालन और तीव्र टर्नअराउंड
- सर्वोत्तम माइलेज-ईंधन लागत में बचत
- 12 फॉरवर्ड + 3 रिवर्स- काम करने में आसानी के लिए स्पीड के कई विकल्प
- अधिक लिफ्ट क्षमता-1700 किलो तक कठिन उपकरणों के साथ काम करने में सक्षम
- 6 साल की वारंटी

रोग मुक्त फसल के लिए सोयाबीन बीज का वीटावैक्स से करें उपचार : श्री पंवार

खरगोन। धानुका कंपनी के बीज उपचारक वीटावैक्स पॉवर से सोयाबीन बीज को उपचारित करने से बीज का अंकुरण जल्दी होता है और रोगों से मुक्ति मिलती है। यह कहना है खरगोन जिले की बड़वाह तहसील के ग्राम जगतपुरा निवासी किसान कैलाश पंवार का। श्री पंवार ने बताया कि उनके पास 5 एकड़ की सिंचित जमीन है जिसमें से 3 एकड़ जमीन में वह सोयाबीन की खेती करते हैं। विगत 2 वर्षों से वे धानुका कंपनी के बीज उपचारक वीटावैक्स पॉवर से सोयाबीन बीज को उपचारित कर रहे हैं। श्री पंवार ने बताया कि वीटावैक्स पॉवर से उपचारित बीज का अंकुरण जल्दी होता है। साथ ही बीजजनित और मृदाजनित फफूंद से होने वाले रोगों से बीज सुरक्षित रहता है। कैलाश पंवार ने बताया कि जब वह बिना उपचारित बीज की बुवाई करते थे तब सोयाबीन के पौधे सूख जाया करते थे। लेकिन वीटावैक्स पॉवर से बीज को उपचारित करने पर पौधे मरते नहीं हैं, बल्कि स्वस्थ और हरे-भरे बने रहते हैं। श्री पंवार का कहना है कि जब वह बीज उपचार नहीं करते थे तब उन्हें मात्र 3 से 3.50 क्विंटल प्रति एकड़ सोयाबीन की उपज प्राप्त होती थी लेकिन वीटावैक्स पॉवर से बीज उपचारित करने के बाद अब उन्हें प्रति एकड़ 4.50 से 5 क्विंटल उपज प्राप्त हो रही है। श्री पंवार ने कहा कि वह अपने अनुभव के आधार पर सभी किसानों से सोयाबीन के बीज को बुवाई करने से पूर्व धानुका के वीटावैक्स पॉवर से उपचारित करने की सलाह देते हैं। किसान भाई मो.: 79993-42761 पर संपर्क कर सकते हैं।

AURA
Benefits up to
₹ 48 000*(P/D)

Grand i10 NIOS
Benefits up to
₹ 48 000*(P/D)

SANTRO
Benefits up to
₹ 28 000*(P)

i20
Starting Price
₹ 7 03 000*

iMT*, DCT,IVT, AT, AMT, MT.*
wide transmission choices

Turbo, Petrol, Diesel Electric, CNG.
wide engine and fuel choices

HYUNDAI

Lowest cost of maintenance##
3 Years Unlimited Kilometer Warranty
Hyundai Mobility Membership
H-Promise Approved Used Car
Give a missed call on 8884709630
BS6 Diesel & Petrol

*Terms & Conditions apply. Benefits include cash discount, exchange bonus and benefits for government or corporate employees, whichever is applicable. **3-year warranty or upto1 00 000 kms whichever is earlier, for Santro, NIOS, AURA, i20 & i20 N line. 3-year/unlimited kms warranty for Venue, Verna, Creta, Alcazar, Tucson & Kona. #Available in selected models only ##Lowest average yearly periodic maintenance service cost starts at ₹2 454 (SANTRO Petrol in Delhi for 5 years), Source: Cardekho.com. HMIL reserves the right to withdraw / modify the scheme without prior notice. Visit your nearest Hyundai dealership for more details. Hyundai urges you to follow traffic rules – these are meant to keep you safe on roads.

For Information Contact - Royal Hyundai Gwalior : Morena- 7880109806, Shivpuri- 7880109806, Dabra- 7880109806, Ashoknagar- 7047240248, **Baba Hyundai Ratlam :** Neemuch- 9039122436, Mandsaur-9977055577, **CI Hyundai Bhopal :** Vidisha- 9981996184, 9425301412, Ganjbasoda- 9425301405, 9425301412, **Prestige Hyundai Jabalpur :** Narsinghpur- 9981504440, **Sihora Sales :** 9977301086, 8839146064 **Abhishek Hyundai Chhindwara :** Betul- 8226006860, Seoni- 8226006868, Lokhnadon- 7440956106, Balaghat- 9301818078, **Harshali Hyundai Sagar** : Damoh- 9630000914, Bina- 8319024874, **Anmol Hyundai Jabalpur :** Mandla- 7354938809, Dindori- 8989892418, Gadawara- 9174007844, **Surjeet Hyundai Bhopal :** Raisen- 9926140016, **Gupta Hyundai Shahdol :** kotma- 8718811709, Umaria- 9009122223, **ASM Hyundai Gwalior :** Datia- 9926186560, Bhind- 9926186416, **Srishti Hyundai Dewas :** Sujalpur- 9424878999, Shajapur- 9009916400, **Badrika Hyundai Satna :** Singrauli- 6264916726, Chitrakoot- 8817404414, **Prince Hyundai Ujjain :** Agar- 9826396766, Nagda- 9575300864, **Prince Hyundai Indore :** Dhar- 9755888811, Mhow- 8839087300 Kukshi- 9131591297, **Bundelkhand Hyundai Chhatarpur :** Tikamgarh- 7611115418, **Central Hyundai khargone :** Khandwa- 9111106717, Bhuranpur- 9981203006, Barwani- 9111100634, Barwaha- 9111106717, **Punyashila Hyundai Hosangabad :** Harda- 9171114430